बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

MAITHLI **मैथिली**

Set-I

MODEL PAPER SET - I

मैथिली (100 अंक)
कक्षा - XII

परीक्षार्थीक लेल निर्देश -

परीक्षार्थी यथासम्भव अपनहि शब्दमे उत्तर देथि ।
उपरान्तक अंक पूर्णांक द्योतक थिक ।
परीक्षार्थी प्रत्येक प्रश्नक संग प्रश्न-संख्या अवश्य लिखथि ।

समय : 3 घण्टा + 15 मिनट **पूर्णांक : 100**

(I) **निम्न बहुवैकल्पिक उत्तरमे सही लिखू :** **5 x 1 = 5**

(i) 'सोहर' कविताक रचयिता के छथि ?
(क) आरसी प्रसाद सिंह (ख) पं॰ गोविन्द झा
(ग) हर्षनाथ झा (घ) गोविन्ददास ।

(ii) 'ललका पाग' कोन विधाक रचना अछि ?
(क) कथा (ख) नाटक
(ग) उपन्यास (घ) निबन्ध ।

(iii) कोन शीर्षक रचनामे तारा दीदी चित्रकलासँ सम्बद्ध पात्र अबैत अछि ?
(क) ललका पाग (ख) सीमक लत्ती
(ग) बाबी (घ) रुना ।

(iv) 'बाबी'क रचनाकार के छथि ?
(क) प्रभास कुमार चौधरी (ख) ललित
(ग) डॉ॰ उषा किरण खान (घ) प्रो॰ वीरेन्द्र झा ।

(v) 'वर्णरत्नाकर'क लेखक के छथि ?
(क) कुमार गंगानन्द सिंह (ख) म॰ म॰ डॉ॰ सर गंगानाथ झा
(ग) राजकमल चौधरी (घ) ज्योतिरीश्वर ।

(II) **निम्नमे स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब'क सही मिलान करू :** **5 x 1 = 5**

स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) जानकी-परिणय	(क) पं॰ गोविन्द झा
(ii) विद्यापति वन्दना	(ख) लालदास
(iii) नूतन स्वर	(ग) प्रो॰ मायानन्द मिश्र
(iv) रुना	(घ) गोविन्ददास
(v) टुटैत कीलक जाँत	(ङ) मनमोहन झा

(III) **निम्नमे रिक्त स्थानक पूर्ति करू :** **5 x 1 = 5**

(i) हरि पुनु ॰ ॰ ॰ ॰ भेल । (गोड़गर / कन्हगर)

(ii) दक्षिण भारतमे ॰ ॰ ॰ ॰ बेस लोकप्रिय अछि । (आधुनिक संगीत / शास्त्रीय संगीत)

(iii) रुनासँ हम ॰ ॰ ॰ ॰ छलहुँ, से नहि । (परिचित / अपरिचित)

(iv) ग्रामीणलोकनि ॰ ॰ ॰ ॰ विश्वास कएलनि । (कृतज्ञतापूर्वक / कृतघ्नतापूर्वक)

(v) सीमक लत्ती ॰ ॰ ॰ ॰ थिक । (कविता / कथा)

2. **निम्न लघु उत्तरीय प्रश्नक उत्तर अति संक्षेपमे दिय :** **6 x 2 = 12**

(i) डॉ॰ सर सी॰ वी॰ रमणक जन्म कतए भेलनि ?

(ii) 'सीमक लत्ती'क रचनाकार के छथि ?

(iii) 'बाल-लीला'मे कोन देवताक बाललीला अछि ?

(iv) नचारीक विषयमे डॉ॰ जयकान्त मिश्र की कहने छथि ?

(v) 'ललका पाग' कथाक नायक के अछि ?

(vi) धार्मिक जागरणक प्रवर्तक के छलाह ?

3. (क) **सप्रसंग व्याख्या करू :** **4**

"उठह कृषक झट करऽ मुख-मंजन, आब ने सूतक बेला ।
झरल तरेगन, मलिन भोरुकवा, पवन चलय अलवेला ॥"

अथवा

"भेल ततय आरम्भ विवाह । रामचन्द्र मण्डप अयलाह ॥
अयलिह पुनि तहँ जनकदुलारि । संग सुवासिनि गबयित नारि ॥"

(ख) **अर्थ स्पष्ट करू :** **4**

“व्यक्तिक उन्नतिसँ समुदायक उन्नति भए सकैत अछि । अधोगति करैत यथार्थतः अधोगति भऽ जाइत
अछि ।”

अथवा

“सत्यक सदा जीत होइत अछि । हमर समाज सत्यहिपर टिकल अछि, से हम कहैत अछि ।”

4. **कोनहु दू दीर्घ उत्तरीय प्रश्नक उत्तर संक्षेपमे दिअ :** **2 x 5 = 10**

(क) ‘रुना’क कथावस्तुसँ अवगत कराउ ।

अथवा

‘बाबी’ कथाक सारांश लिखू ।

(ख) ‘नूतन स्वर’ कविताक भावार्थ लिखू ।

अथवा

‘बाल-लीला’क आधारपर कृष्णक चरित्र-चित्रण करू ।

5. मैथिली साहित्यक आदिकालपर प्रकाश दिअ । **5**

6. **निम्नमे कोनहु एक विषयपर निबन्ध लिखू :** **10**

(क) छात्र ओ अनुशासन
(ख) आतंकवाद
(ग) पर्यावरण
(घ) अहाँक प्रिय रचनाकार

7. अपन क्षेत्रमे सड़कक दुर्दशासँ अवगत करबैत नगरपालिकाक अध्यक्षकेँ पत्र लिखू । **6**

अथवा

महाविद्यालयमे खेलकूदक समुचित प्रबन्धक लेल प्रधानाचार्यकेँ पत्र लिखू ।

8. **शीर्षक दैत निम्नक संक्षेपण करू :** **4**

यथार्थमे कन्यारत्न परमप्रीति ओ अनुकम्पाक पात्र होइत छथि । मनु सेहो धर्म-संहितामे पौत्र आ दौहित्रकेँ तुल्य मानने छथि । अनन्तर कतेक देवता-पितरक आराधनासँ बहुत दिने एक कन्या जन्म लेलथिन ।

9.(i) **निम्न मोहबराक प्रयोग वाक्यमे करू :** **5 x 1 = 5**

ठन-ठन गोपाल, गाल फुलैब, पाग राखब, बीड़ा उठायब, लंक लेब ।

(ii) **निम्न वाक्यकेँ शुद्ध करू :** **5 x 1 = 5**

रमन प्रानहुसँ बढ़ि कए अछि । राम टेकटारि गाम आएल छलीह । राम चरित्र मानस रामायण अछि । चन्द्रमाकेँ शसी सेहो कहल जाइछ । ऋन लेब उचित नहि ।

(iii) **निम्नक एक-एक समानार्थी शब्द लिखू :** **5 x 1 = 5**

सुमन, जल, गंगा, विवाह, आकाश ।

(iv) **तत्पुरुष समासक सोदाहरण लक्षण लिखू ।** **5**

(v) **सन्धि-विच्छेद करू :** **5 x 1 = 5**

पवित्र, विद्यार्थी, सूर्योदय, यथेष्ट, संहार ।

(vi) **विपरीतार्थक शब्द लिखू :** **5 x 1 = 5**

अर्थ, इहलोक, उपकार, अमृत, आर्द्र ।

<u>उत्तरमाला</u>

I. (i) (ग), (ii) (क), (iii) (ख), (iv) (क), (v) (घ) ।

II. (i) (ख), (ii) (घ), (iii) (क), (iv) (ङ), (v) (ग) ।

III. (i) गोड़गर, (ii) शास्त्रीय संगीत, (iii) अपरिचित, (iv) कृतज्ञतापूर्वक, (v) कथा ।

2. (i) डॉ॰ सर सी॰ वी॰ रमणक जन्म तमिलनाडुक त्रिचनापल्ली नामक शहरमे भेलनि ।
(ii) 'सीमक लत्ती'क रचनाकार डॉ॰ उषा किरण खान छथि ।
(iii) 'बाल-लीला'मे भगवान श्रीकृष्णक बाललीला अछि । ई महाकवि मनबोध विरचित 'कृष्णजन्म' प्रबन्ध-काव्यसँ लेल गेल अछि ।
(iv) नचारीकेँ डॉ॰ जयकान्त मिश्र शिवक प्रत्यक्ष प्रार्थना कहने छथि ; एहि पदक माध्यमे भक्त अपन निरुपायता (लाचारी) व्यक्त करैत अछि ।
(v) 'ललका पाग' कथाक नायक मेडिकलमे अध्ययनरत छात्र राधाकान्त अछि ।
(vi) धार्मिक जागरणक प्रवर्त्तक राजा राममोहन राय एवं दयानन्द सरस्वती छलाह ।

3. (क) प्रस्तुत उद्धरण सोमदेव विरचित 'उठह कृषक' शीर्षकसँ लेल गेल अछि । सृष्टिक समस्त प्राणीक दिनचर्या प्रातःकालसँ प्रारम्भ होइत अछि । ई प्रतिदिन एक नवीन संदेश लए कए अबैत अछि जे जीवनकेँ उत्साहित करैछ । प्रातःकालमे प्राकृतिक सौन्दर्यक मनोहरता अद्भुत ओ अनमोल होइछ ।

कवि किसानक निद्राकेँ झकझोरि प्रातःकालीन नित्य-कर्मसँ निवृत्त होएबाक लेल प्रेरित करैत छथि । तरेगन आब लुप्त होबए लागल अछि आ अन्धकारक मलिन रूप स्वतः साफ होबए लगलैक । मलयानिल अपन मोहक सुगन्ध लए बहए लागल ।

अथवा

प्रस्तुत उद्धरण लालदास द्वारा रचित 'जानकी-परिणय'सँ लेल गेल अछि । श्रीराम सीताजीसँ विवाह करबाक लेल मण्डपमे पधारलाह । सीता सेहो लाओल गेलीह आ मिथिलाक परम्पराक अनुरूप गीत गाओल जाए लागल ।

(ख) प्रस्तुत उद्धरण म॰ म॰ डॉ॰ सर गंगानाथ झा लिखित 'अधोगति' शीर्षक निबन्धसँ लेल गेल अछि । व्यक्तिसँ समाज बनैत अछि । अपन हीनभावनाकेँ दूर करैत निरन्तर विकासक दिस अग्रसर होएबाक
चाही ।

अथवा

प्रस्तुत उद्धरण डॉ॰ प्रबोध नारायण सिंह रचित 'हाथीक दाँत' एकांकीसँ लेल गेल अछि । नकली नेता सभ गाँधी-टोपी पहिरि निरीह जनताकेँ ठकैत अछि, मुदा सत्यसँ असत्य सर्वदा परास्त होइत रहल अछि ।

4. (क) मनमोहन झाक 'रुना' शीर्षक कथामे ग्रामीण परिवेशक एक उत्कंठिता-प्रोषितपतिका मैथिल ललनाक मार्मिक जीवन अभिव्यंजित भेल अछि । हुनक पति रुष्ट भए अपन चिर-संचित अभिलाषाक अनुरूप सेनामे भरती भए जाइत छथि आ ओतहि लड़ैत काल हुनक प्राणक उत्सर्ग भए गेलनि । एहि हृदय-विदारक तथ्यसँ परिचित रहितहुँ लेखक अन्त धरि रुनाकेँ वास्तवमे स्थितिसँ अवगत नहि करबैत छथि । कारुणिक पृष्टभूमिमे सर्जित एहि कथामे एक दिस राष्ट्रीय भावनाक स्फुरण तँ दोसर दिस मैथिल ललनाक धैर्य, त्याग आ समर्पणक नैसर्गिक अभिव्यक्ति भेल अछि । बाल-विवाह-सदृश सामाजिक कुरीति दिस सेहो ध्यान आकृष्ट करब कथाकारक उद्देश्य बूझि पड़ैत छथि ।

अथवा

प्रभास कुमार चौधरीक 'बाबी' कथामे प्राचीनता ओ नवीनताक संघर्षक निरूपण भेल अछि । बाबी विधवा छलीह । उतरबरिया घरक बिचला कोठलीमे रहैत छलीह । एक दिन ओ एहि आँगनमे राजरानी-जकाँ आएल छलीह । क्रमशः पारिवारिक स्थिति खराप होइत गेलनि । अन्ततः एहन दिन आबि गेलनि जे बाबी एक तामा चाउर आ एक टारी तेल पैंच ताकए लगलीह । बाबीकेँ सेहन्ता छलनि जे पोताक विवाह देखी, मुदा से पूर नहि भए सकलनि । ओ गंगालाभक हेतु लए जाएल गेलीह त समस्त गामक लोक हुनक दर्शन करए लगलाह ।

(ख) प्रस्तुत पद्यांश 'नूतन स्वर' पं॰ गोविन्द झा विरचित अछि । एहिमे जाहि जागरणक स्फुरण भेल अछि, से परिमार्जित जीवनदर्शन ओ जीवन-मूल्यसँ समन्वित एकटा असाधारण व्यक्तित्वक अभ्युदयक प्रतीक
अछि । जखन समस्त संसार अज्ञानताक गहन अंधकारमे डूबल छल तखन एहि ठामक कवि प्रकाश लए मार्गदर्शन करबाक हेतु उपस्थित भेलाह । ओलोकनि मार्गक कतेको व्यवधानसँ संघर्ष करैत आ गिरि-निर्झरक भीषण आघातकेँ सहैत आशाक नव संदेश लए उपस्थित होइत गेलाह । जखन दानवलोकनिक अत्याचारक कारणेँ समस्त क्षेत्र त्राहि-त्राहि कए क्रन्दन करए लागल तखन ओकर (राक्षकलोकनिक) विनाशक लेल श्रीराम अपन धनुषक संग उपस्थित भेलाह । जखन दुर्जनक विद्रोह प्रबल रूप धारण कए लेलक तखन भगवान महादेव अपन ताण्डव रूपमे उपस्थित भए लोकक कल्याण कएलनि । चारूकात जखन भयंकर हिंसा होबए लागल तखन बहुजन हितायक गुणगान

करैत आ अहिंसाक पाठ पढ़बैत महात्मा बुद्धदेव-सदृश लोक अवतरित भेलाह । एतए लोक कल्याणार्थ दधीचि-सदृश दानी भेल छथि जे प्राणत्याग कए अस्थिदान करबामे एको क्षण संकोच नहि कएलनि ।

अथवा

मनबोध द्वारा रचित 'बाल-लीला' अठारहम शताब्दीक रचना थिक । एहिमे श्रीकृष्णक बाल रूपक वर्णन भेल अछि । धरतीक भारकेँ हल्लुक करबाक हेतु श्रीकृष्ण देवकीक गर्भसँ अवतार लेलनि । जन्मक किछुए दिनक पश्चात् ओ चलबा-फिरबा जोगर भए गेलाह ; अनेक बेर आँगनसँ बाहरो चलि जाथि । कखनहुँ आगि छूबि लेथि तँ कखनहुँ चूनकेँ दही बूझि खा जाथि । कौशलसँ खतरनाक खेल करथि । एक बेर माता यशोदा हुनका उखरिसँ बान्हि देलथिन । श्रीकृष्ण ओकरा लए जमलार्जुन वृक्ष लग गेलाह आ ओकर उद्धार कएल । अपन आँगनकेँ सून देखि माता यशोदा व्याकुल भए गेलीह तथा श्रीकृष्णकेँ बन्धनसँ मुक्त कए हृदयसँ लगा लेलनि ।

5. मैथिली साहित्यक आदिकालक उपलब्ध सामग्री अछि - वाचस्पति मिश्रक 'भामती'मे प्रयुक्त 'हड़ि' शब्द, सर्वानन्द कृत 'अमरकोष'क टीकाक चारि सए मैथिली शब्द, सिद्ध-साहित्य, डाक-घाघ-वचनावली तथा वर्णरत्नाकर ।

6. **छात्र ओ अनुशासन** - छात्र केँ आइ विद्यार्थी रूप मे जानल जाइत अछि । काक चेष्टा, बको ध्यान, श्वान-सदृश निद्रा, संयमी, श्रमी, अल्प भोजन करए आ घर सँ बाहर रहएबला एहि सातो लक्षण सँ युक्त विद्यार्थी यथार्थ रूप मे विद्यार्थी होएताह । 'छात्र' शब्द विद्यार्थी'क पर्यायवाची अछि । हुनका छत्ता जकाँ रक्षात्मक होएबाक चाही ; जेना छत्ता स्वयं रौद ओ वर्षा केँ सहन कए दोसर केँ सुख पहुँचबैत अछि तहिना जे स्वयं कष्ट सहि समाज, राष्ट्र ओ विश्वक कल्याण करथि, से छात्र कहोताह । छात्रक जीवन कठिन होइत अछि ।

उपर्युक्त सातो लक्षणसँ युक्त छात्र वा विद्यार्थी वर्तमान कालमे भेटब दुर्लभ भए गेलाह अछि । हमर वर्तमान शिक्षा-पद्धतिमे बेर-बेर नव प्रयोग ओ सुधारक गप्प कएल जाइत अछि, परंच शिक्षाक क्षेत्रमे अंगरेजक शासनकालसँ चलैत आबि रहल परम्पराक भूत एखन धरि हमरा सब पर सवार अछिए । आइ हमर प्राचीनकालक गुरुकुल ओ गुरु-शिष्य परम्पराक कतए लोप भए गेल अछि, तकर ठेकान नहि। 'गुरु' शब्दक अर्थ आइ ने तँ छात्र बूझि रहलाह अछि ओ ने गुरु स्वयं एकरा चरितार्थ कए रहल छथि । 'गु'क अर्थ 'अंधकार' ओ 'रु'क 'प्रकाश' होइछ अर्थात् जो अन्धकार सँ प्रकाश दिश उन्मुख करथि । तात्पर्य भेल अज्ञान-रूपी अन्धकारक नाश कए जे ज्ञानरूपी प्रकाश प्रदान करथि - "तमसो मा ज्योतिर्गमय" ।

छात्र ओ अनुशासनमे तादात्म्य अछि । ओना अनुशासन जीवन मे प्रत्येक क्षेत्रक लोकक लेल आवश्यक अछि, परंच छात्रक लेल एकर उपादेयता एहि हेतु आओर अधिक बढ़ि जाइछ जे भावी जीवनक ई निर्माणकाल थिक । अनुशासनहीनता सँ छात्र आगू जाए कँ उच्छृंखल भए जाइछ । अनुशासनक अभाव मे आचार, व्यवहार, बुद्धि ओ विवेक नष्ट भऽ जाइत अछि । आजुक छात्र कँ महात्मा गाँधीक ई कथन सतत स्मरण रखबाक चाही जे अनुशासनक अभाव मे परिवार, समाज, संस्था आ' राष्ट्र कथुक सफल संचालन ने भए सकैत अछि । वास्तवमे अनुशासन कँ संगठनक कुंजी ओ प्रगतिक सीढ़ी कहि सकैत छी । अनुशासनहीन छात्र-समुदाय सँ राष्ट्र-निर्माण ओ विकासक कल्पना नहि कएल जाए सकैत अछि ।

छात्रावस्था समाप्त भेला पर छात्र जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे प्रवेश करैत छथि ; राजनीति, सरकारी सेवा, समाज सेवा, राष्ट्रक सुरक्षा इत्यादि मे, परंच अनुशासनक प्रयोजन सब ठाम समाने रूपक होएत अछि । उदाहरणक लेल भारतक सैनिक सेवा कँ लेल जाए । जँ सेना ओ पदाधिकारी मे कतहु अनुशासनहीनताक गंध मात्रो आबि जाए तँ की देशक सुरक्षा संभव भए सकैत अछि ? नियमक पालन के अनुशासन कहि सकैत छी ।

वर्तमान युगक किछु छात्र छात्रावस्थहि मे राजनीति मे प्रवेश कए जाइत छथि । चुनाओकाल मे नेतालोकनि हुनका प्रलोभन दए एहि मे प्रवेश करबाक लेल उन्मुखे नहि, अपितु बाध्य करैत छथि । एहि मे चुनाओक समय छात्रवर्ग द्वारा अपने पक्ष मे मत-पत्र संग्रह करेबाक अभीष्ट रहैत छन्हि । छात्र अनुशासन भंग कए अपन उच्छृंखलताक परिचय देबए लगैत छथि, मुदा बादमे अपन जीवनमे हुनका पश्चाताप हाथ अबैत छनि। परीक्षा मे छात्रक अनुशासनहीनता जखन पराकाष्ठा पर पहुँचहि गेल तँ अन्त मे उच्च न्यायालय द्वारा आचार-संहिता बनाए चोरि कँ कठोर दण्डनीय घोषित कएल गेल । फलस्वरूप एहि बेर परीक्षा मे छात्र गंगाजल सन निर्मल भए अनुशासनक पालन कएलनि अछि । तँ छात्रक लेल अनुशासन अत्यन्त आवश्यक अछि ।

7.

सेवा मे -

श्रीमान् अध्यक्ष महोदय

दरभंगा नगरपालिका, दरभंगा ।

विषय - सड़कक दुर्दशा सँ सम्बद्ध प्रार्थना ।

निवेदन अछि जे हमरा क्षेत्रक सड़कक स्थिति अत्यन्त जर्जर अछि ; कोनो मोहल्लाक सड़क आवागमनक लेल ठीक नहि अछि । सड़कक बीच मे खदहा सभ बनि गेल अछि । कतहु रोड़ा-रोड़ी तऽ कतहु बालू भरल अछि । तैं आवागमन मे अत्यन्त दिक्कत भए रहल अछि ।

अपने सँ साग्रह अनुरोध जे सड़कक मरम्मति पर विशेष ध्यान दी, जाहिसँ आवागमन निर्बाध रूपें भए सकए ।

एहि लेल हमरालोकनि अपनेक सदा आभारी रहब ।

दिनांक : 15-01-2016

अपनेक,
हस्ताक्षर -
मिथिला कालोनी, दरभंगा ।

अथवा,

सेवा मे -
श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,
चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा ।

विषय - खेलकूदक समुचित प्रबन्धसँ सम्बद्ध प्रार्थना ।

निवेदनपूर्वक सूचनीय अछि जे महाविद्यालय मे खेलकूदक समुचित व्यवस्था नहि अछि ; मैदान मे खूटा-खूटीक कारणेँ खेलकूद संभव नहि भए पाबि रहल अछि । खेल प्रशिक्षक केँ अभाव मे फुटबाल, वॉलीबॉल, क्रिकेट इत्यादि टीमक गठन नहि भए रहल अछि । विभिन्न खेलक व्यवस्थाक लेल समुचित राशिक आवंटन सेहो अपेक्षित अछि, अतः अपने सँ प्रार्थना अछि जे यथाशीघ्र एवं यथासंभव महाविद्यालय मे खेलकूदक समुचित प्रबन्ध करबाओल जाए, जाहि सँ एकरा प्रति छात्रगणक रुचि बढ़न्हि तथा हुनकालोकनिक स्वास्थ्य ठीक रहनि ।

दिनांक : 18-01-2016

अपनेक आज्ञाकारी,
अश्विनी झा
क्रमांक - 1, कक्षा - XII
चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय
दरभंगा ।

8. शीर्षक - **सीमन्तिनी**
कन्यारत्न समाजक लेल दुर्लभ छथि । मनु अपन धर्म-संहितामे पुत्र ओ पुत्रीमे विभेद नहि करबाक कहने छथि ।

9. (i) **ठन-ठन गोपाल** - ओ हमरा की देत ? ओ तँ स्वयं ठन-ठन गोपाल अछि ।
गाल फुलैब - बिनु कसुरे ओ हमरासँ गाल फुलओने छथि ।
पाग राखब - ओ हमर पाग समयपर टाका दए राखि लेलनि ।
बीड़ा उठायब - छात्रकेँ संगठित करबाक लेल ओ बीड़ा उठओने अछि ।
लंक लेब - हिंसक ध्वनि सुनितहि सभ जानवर लंक लए लेलक ।

(ii) रमन प्राणहुँसँ बढ़ि कए छथि । राम टेकटारि गाम आएल छलाह । 'रामचरितमानस' रामायण अछि । चन्द्रमाकेँ शशि सेहो कहल जाइछ । ऋण लेब उचित नहि ।

(iii) प्रसून, नीर, मंदाकिनी, पाणिग्रहण, व्योम ।

(iv) तत्पुरुष समास - जतए पहिल पद विशेषण आ उत्तर पद विशेष्य होइछ ।

जेना -

चारिबाट - चौबट्टी

दानवीर - दानमे वीर

(v) पो + इत्र, विद्या + अर्थी, सूर्य + उदय, यथा + इष्ट, सम् + हार ।

(vi) अनर्थ, परलोक, अपकार, विष, शुष्क ।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

MAITHLI **मैथिली**

Set-II

MODEL PAPER SET - II

मैथिली (100 अंक)

कक्षा - XII

परीक्षार्थीक लेल निर्देश : देखू Model Paper, Set - I क निर्देश ।

समय : 3 घण्टा + 15 मिनट **पूर्णांक : 100**

(I) **निम्न बहुवैकल्पिक उत्तरमे सही लिखू :** **5 x 1 = 5**

(i) 'ऋतु-वर्णना' शीर्षक रचनाक लेखक छथि :
(क) दुर्गानाथ झा 'श्रीश' (ख) प्रो॰ प्रबोध नारायण सिंह
(ग) ज्योतिरीश्वर (घ) ललित ।

(ii) आरसी प्रसाद सिंहक रचना छनि :
(क) बाल-लीला (ख) सोहर
(ग) छुतहर (घ) बाढ़िक हकरोस।

(iii) 'डॉ॰ सर सी॰ वी॰ रमण'क लेखक छथि :
(क) डॉ॰ भीमनाथ झा (ख) मनमोहन झा
(ग) कुमार गंगानन्द सिंह (घ) भाग्यनारायण झा ।

(iv) गद्य विधाक विकास कोन कालमे भेल :
(क) शून्यकाल (ख) प्राचीनकाल
(ग) मध्यकाल (घ) आधुनिक काल

(v) 'नूतन स्वर' कविताक रचयिता छथि :
(क) मनबोध (ख) हर्षनाथ झा
(ग) पं॰ गोविन्द झा (घ) आरसी प्रसाद सिंह

(II) **निम्नमे स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब'क सही मिलान करू :** **5 x 1 = 5**

स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(i) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'	(क) डॉ॰ सर सी॰ वी॰ रमण
(ii) भाग्यनारायण झा	(ख) ऋतु-वर्णना
(iii) गोविन्ददास	(ग) हम संस्कृति भारतवर्षक
(iv) डॉ॰ उषा किरण खान	(घ) विद्यापति-वन्दना
(v) ज्योतिरीश्वर	(ङ) सीमक लत्ती

(III) **निम्नमे रिक्त स्थानक पूर्ति करू :** **5 x 1 = 5**

(i) डॉ॰ सर सी॰ वी॰ रमणकेँ नोबेल पुरस्कार । । । । ई॰ मे भेटलनि । (1930 / 1940ई॰)
(ii) क्रिसमस पर्व । । । । मे मनाओल जाइत अछि । (दिसम्बर / जनवरी)
(iii) शिव विषयक गीतकेँ । । । । कहल जाइत अछि । (बारहमासा / नचारी)
(iv) माँगि रहल छी प्रथम आइ हम अपन । । । । वाणी । (मातृजन / पितृजन)
(v) 'सीमक लत्ती' । । । । थिक । (एकांकी / कथा)

2. **निम्न लघु उत्तरीय प्रश्नक उत्तर अति संक्षेपमे दिअ :** **6 x 2 = 12**

(i) एकतापर 'महाभारत' मे युधिष्ठिर की कहने छथि ?
(ii) डॉ॰ भीमनाथ झा 'मैथिली निबन्ध साहित्यक रूपरेखा' मे की कहलनि अछि ?
(iii) कोन ऋतुमे गाछ पल्लवित होइत अछि ?
(iv) 'ललका पाग' क नायिका के छथि ?
(v) 'सीमक लत्ती' किनकर रचना छथि ?
(vi) 'बाल-लीला' मे कोन देवताक लीलाक वर्णन अछि ?

3. (क) **सप्रसंग व्याख्या करू :** **4**

“जमला-अर्जुन कमलानाथ
जुगुति उपारल छुइल न हाथ
खसल महातरु हँसल मुरारि
भेल अघात जगत परिचारि ।”

अथवा

“प्रतिरूप हमरे फूल, फल, मधु, शर्करा
छी हमही भूमिक उर्वरा
जीवित हमर रससँ धरा ० ० ० ।”

(ख) **अर्थ स्पष्ट करू :** **4**

विशेषतः ई तँ सैनिकमे स्वाभाविक गुण थिकैक जे जावत ओ सैन्य पद पर रहत तावत संसारमे सबकेँ अपनासँ न्यूने बूझत ।

अथवा

मैथिल स्त्रीकेँ चिन्हबामे कोनो भ्रम नहि भऽ सकैत अछि । आन देश आन भेसक स्त्रीसँ बहुत भिन्न रहैत अछि ।

4. **निम्न दीर्घ उत्तरीय प्रश्नक उत्तर संक्षेपमे दिअ :** **2 x 5 = 10**

(क) ‘हाथीक दाँत’ शीर्षक एकांकीक भाव स्पष्ट करू ।

अथवा

मिथिलामे श्राद्ध, उपनयन आदि खर्चा वास्ते गामक लोक सभ सहजहि कर्जा दऽ दैत अछि । एहि सामाजिक व्यवस्थापर सार्थक टिप्पणी लिखू ।

(ख) ‘बाढ़िक हकरोस’ शीर्षक कविताक भावार्थ लिखू ।

5. मैथिली साहित्यक आदिकालसँ अहाँ की बुझैत छी ? लिखू । **5**

6. **निम्नमे कोनहु एक विषयपर निबन्ध लिखू :** **10**

(क) सिनेमा
(ख) अकाल
(ग) वसंत ऋतु
(घ) सह-शिक्षा

7. परीक्षाक समयमे पिताजीसँ रुपयै मँगैवाक लेल पत्र लिखू । **6**

अथवा

परीक्षा फीस माफीक लेल प्रधानाचार्यकेँ आवेदन दिअ ।

8. **शीर्षक दैत निम्नक संक्षेपण करू :** **4**

लोकसाहित्य प्रेरणाक अक्षय भंडार थिक । सहस्र-सहस्र महाकाव्य, नाटक, उपन्यास अथवा जीवनी अइसँ बहार कय नाना रूपमे सर्जित कयल जा सकैछ । सभसँ पैघ बात ई जे लोक-गाथाक आधार पर, इतिहासक अमूल्य खोज भए सकैत अछि । सहस्रो ठाँ खोदाइक काज सफलतापूर्वक चलि सकैत अछि । स्मरण रखबाक चाही जे मैथिली शब्दकोषक लेल सबसँ पैघ देन लोकसाहित्यैक हैत ।

9.(i) **निम्नमे कोनो पाँच गोट लोकोक्ति / मोहाबराकेँ वाक्यमे प्रयोग कए अर्थ स्पष्ट करू :**
5 x 1 = 5

भोजक कालमे कुम्हर रोपब, दूरक ढोल सुहाओन, दसक लाठी एकक बोझ, कन्नी काटब, ढोल पीटब, तिलकेँ ताड़ बनाएव ।

(ii) **कोनो पाँच शब्द-युग्मक अर्थ लिखू :** **5 x 1 = 5**

खेत-खेद, काच-काँच, कलि-कली, आदि-आदी, तप-ताप, दिन-दीन, डोरि-डोरी ।

(iii) **विपरीतार्थक शब्द लिखू :** **5 x 1 = 5**

विजय, अनुज, सगुण, सधवा, आगम ।

(iv) **निम्न उपसर्गसँ 'शब्द' बनाउ :** **5 x 1 = 5**

वि, नि, सह, अप, सु ।

(v) **निम्न शब्दसँ भाववाचक संज्ञा बनाउ:** **5 x 1 = 5**

नेना, सुन्दर, गुरु, बूढ़, मूर्ख ।

(vi) व्युत्पत्तिक आधार पर संज्ञाक भेद सोदाहरण लिखू । **5**

उत्तर (ANSWERS)

1. I. (i) – (ग), (ii) – (घ), (iii) – (घ), (iv) – (घ), (v) – (ग)।

I. (i) – (ग), (ii) – (क), (iii) – (घ), (iv) – (ङ), (v) – (ख)।

II. (i) 1930, (ii) दिसम्बर (iii) नचारी, (iv) मातृजन, (v) कथा

2. (i) एकता पर 'महाभारत' मे दुर्योधन कँ सम्बोधित युधिष्ठिरक कथन अछि, जे बाहरी संकट उपस्थित भेला पर अपना महँक समस्त भेदभावकँ बिसरी एक भए जाएब भारतक विशेषता रहल अछि। इतिहास साक्षी अछि जे जखन-जखन हमरालोकनि एहि विशेषता बिसरलहुँ, तखन-तखन पराभवमे पड़लहुँ।

(ii) डॉ० भीमनाथ झा 'मैथिली निबन्ध साहित्यक रूपरेखा मे निबन्ध कँ परिभाषित कऽ ओकर साहित्यिक समृद्धि पर अपन विचार अभिव्यक्त कएलनि अछि।

(iii) वसन्त ऋतु मे गाछ पल्लवित होइत अछि।

(iv) 'ललका पाग' के नायिका छथि त्रिपुरा। हिनका लोक 'तिरू' कहैत छलनि।

(v) 'सीमक लत्ती' क रचनाकार छथि डॉ० उषा किरण खान।

(vi) 'बाललीला' मे श्रीकृष्णक लीलाक वर्णन अछि।

3. **(क)** प्रस्तुत पाँती हमर पाठ्य-पुस्तकक 'बाललीला' शीर्षक से उद्धृत अछि।

एहि पाँतीक रचयिता 'मनबोध' छथि। व्याख्येय पंक्ति भगवान श्रीकृष्ण द्वारा जमलार्जुनक उद्धार सँ सम्बद्ध अछि। भगवान कृष्णक 'बाललीला' के प्रसंग मे कथा अछि जे कृष्ण बड़ नटखट छलाह। खिसिया कऽ माए यशोदा डोरी सँ हुनका उखड़ि मे बान्हि एकटा गाछ सँ बान्हि देलथिन्ह। भगवान श्रीकृष्ण जे लक्ष्मीपति (विष्णु) छथि, जुगुति लगा कऽ डोरीक बन्धन सहित ओहि गाछ केँ उखाड़ि देलन्हि।

ओ विशाल गाछ खसल आ भगवान हँसए लगलाह। गाछ खसला सँ संम्पूर्ण संसार मे हाहाकार भ गेल। संगहि जमला-अर्जुन जे शापवश गाछ भेल छल ओ भगवानक प्रार्थना कऽ अपन पूर्व रूप मे पुनः आबि गेल।

अथवा

प्रस्तुत पद 'गोबर थिकहुँ हम' कवितसँ गृहित अछि। एहिमे कवि वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' गोबरक उपयोगिता ओकरे मुँहे बखान कयलनि अछि। गोबर कहैत अछि जे हमरामे उर्वरा शक्ति अछि। हमरेसँ पृथ्वी उर्वर बनल रहैत अछि। हमर प्रयोग पृथ्वीमे भेलासँ पृथ्वीसँ खूब अन्न, फल, फूल, शर्करा, मधु आदिक उत्पादन होइछ। जँ हमर प्रयोग धरतीमे नहि होएत तऽ धरती ऊसर बनि जाएत। फूल-फल अभाव भऽ जाएत। अस्तु पृथ्वीकेँ रसवती बनएबाक हेतु हमर उपयोग आवश्यक अछि।

3. **(ख)** प्रस्तुत संदर्भ मनमोहन झा रचित 'रूना' शीर्षक कथाक एक अंश थिक। एतए सैनिक लोकनिक स्वभाव एवं मनोवृत्तिक स्वाभाविक निरूपण भेल अछि।

सैनिकलोकनि जाधरि सेना मे रहि काज करैत अछि ताधरि ओकरामे अहं भावनाक

विशेष ध्यान रहैत छैक। ओ सदिखन संसारक लोकसभकेँ आपनासँ छोट बुझैत अछि। यद्यपि ई विचार उचित नहि छैक तथापि ओ एहि लेल क्षम्य अछि जे जखन देशक हित पर प्राण उत्सर्ग करबाक प्रश्न उठैत छैत तखन ओ सहर्ष अपन प्राण केँ राष्ट्रक हित पर उत्सर्ग कए दैत अछि। ई काज ओकर प्रशंसनीय थिक। तखन ओ किछु दम्भो करैत अछि तकरा दिस ध्यान नहि देल जा सकैछ।

अथवा

प्रस्तुत उद्धरण तिलकोर भाग-2 मे संकलित 'राष्ट्रीय एकताक महत्त्व' शीर्षक निबन्धसँ लेल गेल अछि। एकर लेखक छथि कुमार गंगानंद सिंह। जाधरि मनुष्य संगठित नहि रहत ता धरि शत्रुक सामना नहि कऽ सकैत अछि। भारत केँ विविधता मे एकताक देश कहल जाइत छैक। हिमालयसँ कन्याकुमारी धरि एकर क्षेत्र छैक तथा सभ धर्म, प्रान्त ओ भाषा-भाषीमे एकता अछि। सभ एकताक सूत्रमे बान्हल अछि।

4. **(क)** 'हाथीक दाँत' शीर्षक एकांकी प्रबोधनारायण सिंहक प्रसिद्ध एकांकी थिक। एहिमे वर्त्तमान युगक स्वार्थी, लोलुप एवं भ्रष्ट नेताक चित्र अंकित अछि। हाथीक बाहर निकलल दाँत देखावटी होइत अछि; असल दाँत ओकर

भीतर होइत अछि। भ्रष्टनेता बाहर सँ किछु आओर तथा अन्दर सँ किछु आओर रहैत अछि। नकली नेता कृत्रिम समाज सेवी मुखौटा लगाकऽ घृणित कार्य करैत अछि। ओ एकटा महिला आश्रमक स्थापना कए अपन उदारताक झूठ स्वांग रचैत अछि। ओ देखाएबाक लेल आमरण अनशन करैत अछि तथा नुका कऽ उत्तम भोजन ग्रहण करैत अछि। अत्यधिक टाका संग्रह कऽ ओ धनिक बनैत अछि। एहि एकांकीक नायिका बिजली सेहो एहन भ्रष्टाचारी नेताक सहायिका बनैत अछि।

अथवा

मिथिला मे श्राद्ध, उपनयन आदि खर्चा वास्ते गामक लोक सभ सहजहिका कर्जा दऽ दैत अछि। इ सामाजिक व्यवस्था कतेको वर्ष सँ मिथिला मे चल आबि रहल अछि। कोनो परिवार मे जतय श्राद्ध, उपनयन, विवाह इत्यादि कार्य उपस्थित होएत छैक तऽ सामर्थ्यक अनुकूल सामाजिक स्तर बरकरार रखैत लोक खर्च करऽ चाहैत छथि। ओहि मे अर्थाभाव भेला पर सामाजिक सहयोग सँ इ सब कार्य पूर्ण कएल जाएत अछि। समाज मे सहयोग भावना विद्यमान अछि। कहावत छैक दसक लाठी एकक बोझ। अभिप्राय इ जे कार्य करक अछि, परन्तु रुपैयाक कमी भ रहल अछि। जे दऽ सकैत छथि हुनका सँ कर्ज लऽ कऽ उक्त कार्य कँ लोक पूर्ण करैत अछि। एहि मे सामाजिक समरसता एवं सहयोग अपूर्व अनुभूति होएत अछि।

दोसर रूप मे इहो बात होएत छैक जे सहज रूपें कर्जा भेट गेला पर लोक क्षमता सँ बेसी खर्च कऽ दैत छथि जाहि सँ हुनकर पारिवारिक अर्थव्यवस्था अनियंत्रित भऽ जाएत अछि; ओ सम्पन्नता सँ विपन्नता दिश उन्मुख भऽ जाएत छथि जकर कुप्रभाव परिवारक विकास पर पड़ैत छैक।

(ख) आरसी प्रसाद सिंह मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ गीतकार रूप मे विख्यात छथि। हिनक गीत मे करुणाक कमनीयता आ कोमलताक त्रिवेणी सतत प्रवाहित होइत रहैत अछि। प्रस्तुत कविता मे मिथिलाक बाढ़िक विभीषिकाक सजीव चित्रण कयल गेल अछि।

वर्षा ऋतु मे समस्त मिथिला बाढ़िक प्रकोप सँ ध्वस्त भए जाइछ। हिमालयक समीप रहलासँ मिथिला मे कतेको नदी अपन ताण्डव रूप देखा दैत अछि। वास्तवमे प्रत्येक वर्ष आबय बला बाढ़ि मिथिलाक विपन्नताक प्रमुख कारण थिक। बाढ़िक भीषण जल प्लावन केँ देखि लोकक प्राण काँपय लगैत छैक। मनुष्यक कोन कथा कुकुर केँ सेहो कतहु भोजन नहि भेटैत छैक। माल-मवेशीक अकाल मृत्यु सँ गीध झुंडक-झुंड आबि रहल अछि। लोक व्याकुल भए निर्णय नहि कऽ पबैत अछि जे कतय जाउ जखन घर-आँगन, खेत-खरिहान सब जलमग्न भए गेल तखन लोक कतए जाएत। कतेको लोक बाढ़िक तेज धार मे बहि गेल। लोक भूखल-पियासल दग्ध भए हकरोस करैत अछि। ओ तीव्र धार मे हेलैत आ भासल जाइत अछि। प्रकृतिक प्रकोप सँ के विद्रोह कए सकैत अछि? कविक संकेत अछि जे एहि भीषण बाढ़िक

समस्याक शीघ्र समाधान होबए चाही, जाहि सँ मिथिलावासीलोकनिक जीवन सब तरहँ सुखमय भऽ जाए।

5. मैथिली साहित्यक आदिकालक उपलब्ध सामग्री अछि- वाचस्पति मिश्रक भामती मे प्रयुक्त 'हड़ि' शब्द, सर्वानन्द कृत अमरकोशक टीकाक चारि सए मैथिली शब्द, सिद्ध साहित्य, डाक-घाघ वचनावली तथा 'वर्णरत्नाकर'।

6. **(क) दहेज प्रथाक दुर्गुण** - सामाजिक जीवन रूपी जे रथ तकर दू गोट पहिआ होइत छैक। एकटा अगर ओहिमे पुरुष छैक त दोसर पहिआ निश्चित रूपसँ स्त्री अछि। स्त्री आ पुरुष अपरिचित रहितहु एक गोट मंगलसूत्रमे आबद्ध भए दू प्राण एक जीवनक रूप धारण कए लैत अछि। आजुक भौतिकवादी युगमे वरपक्षक लोक कन्यापक्षकेँ दबाओ दए धन प्राप्तिक लोभसँ दहेज-दानवकेँ अपनबैत छथि। जकरा लऽ कऽ ओहन जे जीवन जाहिमे दू प्राण एक जीवन भए जाइछ ताहि, मध्य रंग-विरंगक कलह उत्पन्न होइत रहैत अछि। ओ एहन दारुण रूप लए लैत अछि जे दहेज-हत्या तक पहुँचि जाइत अछि।

दहेज वास्तवमे भारतीय संस्कृतिक भव्य भाल पर कलंकक कालिमाक रूप

लए लेने

अछि। कन्याक पिता स्नेह आ वात्सल्यक प्रतिमूर्ति अपन कन्या रत्नकेँ सत्पुरुषक हाथमे सौंपक लेल लालायित रहैत छथि। ओ अपन मान-मर्यादा, पद-प्रतिष्ठा, नियम-निष्ठा सबके ताख पर राखि नीक घर-वरक अन्वेषणमे

दिन राति एक कए एँड़ी चोटीक पसीना एक करैत छथि। ओम्हर वरक पिता कंचन-कामिनीक कल्पनालोकमे विचरण कएनिहार अपन भाग्य पर ऐंठैत-जुठैत रहत। कन्यपक्षसँ मनोनुकूल दहेज लेबाक लेल निर्भीक आ निष्ठुर बनल ठाढ़ रहैत छथि। ओ विवश कन्याक पितासँ देखनगर दहेजक धनराशि देबाक स्वीकृति भेटलाक बादे वरदानक स्वीकृति प्रदान करैत छथि। यदि कन्याक पिता अपन वचन पूरा करबामे लचलाह तऽ वरक परिवारसँ व्यंग्य सुनि अपमानित होइत छथि। एते धरि जे ओ राशिमे त्रुटि भेला पर कतेको कन्याकेँ मृत्यु पर्यन्तकेँ वरण करए पड़ैत छैक।

अगर आर्थिक विषमता कारण मुँह माङल दहेज राशि सुनि दहलि गेलाह त कन्यादान होएब कठिन भए जाइत छनि। एहनामे कतेको कन्या सौभाग्य सिन्दूर सँ वंचित रहि जाइत छथि। एहि परिस्थितिमे कतेको अबोध कन्या वा तऽ आत्महत्या कए लैत अछि अन्यथा अपन कुल-खानदानक मर्यादा माटिमे मिलाए नारकीय जीवन बिताबक लेल विवश भए जाइत अछि। एहन परिस्थितिमे कतेको कन्याक माय-बाप हतप्रभ भऽ आत्महत्या करबाक लेल विवश भए जाइत छथि।

अस्तु, युवकलोकनिक कर्त्तव्य होइत अछि जे दहेज रुपी एहि दानवसँ समाजकेँ रक्षा करथि।

7. पूज्य पिता जी, निकासी

दैनिक सादर प्रणाम,

दिनांकः 20.01.2016

हम एतए कुशल छी। परिवारक कुशलताक जिज्ञासा अछि। बहुत दिन सँ अपनेक पत्र नहि आएल अछि, जाहि सँ मन चिन्तित अछि।

आगाँ हमर परीक्षा मार्च महीनामे होएत। परीक्षाक तैआरी मे हम व्यस्त छी परन्तु हमरा

लग रुपैया नहि अछि। लगभग एक सप्ताह पूर्व अपनेक देल रुपैया समाप्त भऽ गेल, अस्तु अपने सँ प्रार्थना जे शीघ्रातिशीघ्र रुपैया पठएष्बाक कष्ट करी।

शेष परीक्षाक बाद पत्र देब।

अपनेक

स्नेही पुत्र,

हर्ष

कुमार

अथवा

सेवा मे–

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय,

हाई स्कूल, पिण्डारुछ

महाशय,

अहाँक विद्यालयक हम 12म कक्षाक छात्र छी। हम नितांत निर्धन छी। पिता जी छोट–छीन किसान छथि। हुनका लग एक एकड़ मात्र जमीन छनि। हुनक जीविकाक

साधन खेती मात्र छनि। हमरा परिवार मे दोसरा केओ कमाएबला नहि अछि। परिवारक सदस्य संख्या कुल आठ अछि; सभ केओ पिता जी घर पर आश्रित अछि। अहाँक विद्यालयक हम वाद-विवाद सभाक मन्त्री छी। जँ हमर परीक्षा फीस माफ नहि क देल जेतैक तऽ डर अछि जे हमर परीक्षा मे व्यवधान भऽ जाएत। हम आगू अध्ययनक क्रम जारी नहि राखि पाएब, अतः श्रीमान् सँ निवेदन अछि जे हमर पूरा परीक्षा फीस माफ कऽ देबाक कृपा करी।

एहि लेल हम सतत अपनेक आभारी रहब।

अहाँक आज्ञाकारी

छात्र,

शिव

कुमार

दिनांकः- 28.01.2016 वर्ग-XII,

क्रमांक नं०- 01

8. लोक साहित्य मे साहित्यक सम्पूर्ण विधा अन्तनिर्हित रहैत अछि। एकरे आधार पर इतिहासक अमूल्य खोज संभव अछि। लोक साहित्येक अमूल्य देन मैथिली शब्दकोश थिक।

9. **(i) भोजक कालमे कुम्हर रोपब**- चक्रधर बरिआतीक लेल विदा भेलाह तखन पाग खरीदक लेल बेटा के ँ पठओंलथिन्ह एहनेठाम कहैत छैक जे भोजक कालमे कुम्हर रोपब।

दूरक ढोल सुहाओन- संतोषक घर मे उपास पड़ैत छैक आ सोहन कहैत

छैक जे संतोषकेँ रुपैयाक कमी छैक। एहने ठाम कहैत छैक जे दूरक ढोल सुहाओन।

दसक लाठी एकक बोझ– रामेश्वर प्रतिज्ञा कएलक जे गहूम पटेबाक लेल नाली बनाएब। ओ शुरू कएलक, लेकिन नाली जाबत बनितैक ताबत गहूम खराब भऽ जएतैक, परन्तु संग किछु युवक आबि ओकर मददि कएलकैक आ तुरत नाली बनि गेलैक। एहने ठाम कहैत छैक जे दसक लाठी एकक बोझ।

कन्नी काटब– रामचन्द्र अरुण के ँ रुपैया रखने छैक, परन्तु दै सती मे कन्नी काटि रहल छैक।

ढोल पीटब– सोहन काज करत नहि आ अनेरे ढोल पीटत।

तिल केँ ताड़ बनाएब– साधारणो बात केँ सुरेश तिल केँ ताड़ बनाबए लगैत अछि।

(ii) **खेत**– खेती योग्य भूमि | **खेद**– दुःख

काच– शीशा | **काँच**– बिनु पाकल

कलि– कलियुग | **कली**– कोंढ़ी

आदि– आरम्भ | **आदी**– अदरख

तप– तपस्या | **ताप**– ऊष्मा

दिन– दिवस | **दीन**– गरीब

डोरि– असगनी | **डोरी**– रस्सी।

(iii) **विजय**– पराजय | **अनुज**– अग्रज

सगुण- निर्गुण **सधवा**- विधवा

आगम- निगम

(iv) वि- विनाश **नि**- निर्भय

सह- सहयोग **अप**- अपमान

सु- सुयश

(v) नेना- नेनपन **सुन्दर**- सुन्दरता

गुरु- गुरुता **बूढ़**- बूढ़ापा

मूर्ख- मूर्खता

(vi) व्युत्पत्तिक विचार सँ संज्ञाक तीन भेद होइछ-(1) रूढ़, (3)यौगिक आ (3) योगरूढ़

(1) रूढ़- जाहि शब्दक खण्ड सार्थक नहि हो। जेना 'नाक' शब्दक खण्ड 'ना' ओ 'क' कएला पर कोनो अर्थ नहि होएत।

(2) यौगिक- जे दू शब्दक मेल सँ बनैत अछि ओ ओकर दुहू शब्द खण्ड सार्थक होइछ। यथा-विद्या + आलय = विद्यालय। एतए दुहू खंड सार्थक अछि।

(3) योगरूढ़- जे शब्द साधारण अर्थ कँ छोड़ि विशेष अर्थक बोध कराबए। यथा-पंकज (कमल), लम्बोदर (गणेशजी)। एतय पाँक सँ जनमल 'कमल' विशेष अर्थक बोधक भेल।

***

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

MAITHLI **मैथिली**

Set-III

MODEL PAPER, SET – III

समय : 3 घंण्टा + 15 मिनट

पूर्णांक : 100

परीक्षार्थीक लेल निर्देश : देखू Model Paper, Set - I क निर्देश।

1. **I**. प्रश्नक बहुवैकल्पिक उत्तर मे सही लिखू: 5 x 1 = 5

i. 'रूना' क कथाकार छथि:

(क) मनमोहन झा (ख) हरिमोहन झा

(ग) रमानाथ झा (घ) तंत्रनाथ झा

ii. 'सोहर' क कवि छथि:

(क) हर्षनाथ (ख) गोविन्ददास

(ग) आरसी प्रसाद सिंह (घ) पं० गोविन्द झा

iii. विचित्र प्रेम कोन कथा थिक:

(क) फ्रेन्च कथा (ख) रूसी कथा

(ग) अमेरिकन कथा (घ) भारतीय कथा

iv. 'उठह कृषक' थिक:

(क) कथा (ख) कविता

(ग) निबन्ध (घ) एकांकी

v. 'ऋतु वर्णना' क लेखक छथि:

(क) कुमार गंगानंद सिंह (ख) डॉ० भीमनाथ झा

(ग) ज्योतिरीश्वर (घ) राजकमल चौधरी

II. सही जोड़ाक मिलान करू: 1 x 5 = 5

(i) डॉ० जगदीशचन्द्र झा (क) हाथीक दाँत

(ii) भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' (ख) ललका पाग

(iii) राजकमल चौधरी (ग) आवाहन

(iv) प्रबोध नारायण सिंह (घ) बड़ा दिनक धूमधाम

(v) लालदास (घ) जानकी परिणय

III. रिक्त स्थानक पूर्ति करू: 1 x 5 = 5

(क) छोट ओ गरीब लोक अधिकांश ..... पहिरय ।

(विष्ठी/धोती)

(ख) मिथिलामे विकसित शिवभक्ति मूलक रचना महेशवाणी ओ .....

नाम सँ प्रसिद्ध

अछि।

(नचारी/सोहर)

(ग) ..... स्त्रीके चिन्हबामे कोनो भ्रम नहि भऽ सकैत अछि।

(मैथिल/भारतीय)

(घ) जानकी परिणयक कवि ..... छथि।

(लालदास/मनबोध)

(ड़) सीमक लत्ती ..... थिक।

(कथा/एकांकी)

2. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नक उत्तर संक्षेप मे लिखू: 2 x 5 = 10

(क) गाममे ताराकेँ के सभ छलनि?

(ख) 'ललक पाग' क नायिका के छलीह?

(ग) 'सोहर' मे कोन देवताक जन्मक विषयमे कहल गेल अछि?

(घ) 'छुतहर' कविताक रचयिता के छथि?

(ड़) सीमन्तिनीक रचनाकारक नाम लिखू।

3. (क) सप्रसंग व्याख्या करू: 5 x 2 = 10

''सूर्यक दक्षिण गति, तुषारक सम्पति, कुन्दक प्रकाश, मरुआक वास, निशाक महत्त्व।

अथवा, विशेषत: ई तँ सैनिकक स्वाभाविक गुण थिकैक जे जाबत ओ सैन्यमे रहत

ताबत संसारमे सबकेँ अपनासँ न्यूने बुझत।

(ख) अर्थ स्पष्ट करू:

''भेल ततय आरम्भ विवाह ।
रामचन्द्र मण्डप अयलाह ।।
अयलिह पुनि तहँ जनक दुलारि ।
संग सुवासिनी गबयित नारि।।''

अथवा

''घट-घट मे वासी ब्रह्म एक हो भान अविद्यासँ अनेक।

बुझितहुँ वेदान्ती हमर वारि, अपवित्र कहथि कऽ कऽ प्रलाप।।''

4. कोनहु दू दीर्घ उत्तरीय प्रश्नक उत्तर संक्षेपमे दिअः 5 x 2 = 10

(क) हर्षनाथ झा रचित 'सोहर' शीर्षक कविताक सारांश लिखू।

अथवा, डॉ० सी.वी. रमणक उपलब्धिक विवरण दिअ।

(ख) मायानंद मिश्रक कथा शिल्प सँ परिचय कराउ।

अथवा, टुटैत कीलक जाँत शीर्षक कथामे वर्णित विचार कें अंकित करू।

5. आदिकाल विषयमे लिखू। 5 x 1 = 5

6. कोनहु एक विषय पर निबन्ध लिखूः 10x 1 = 10

(क) छात्र ओ राजनीति (ख) सरस्वती पूजा (ग) पुस्तकालयक उपयोगिता

7. अपन मित्रकँ एक पत्र लिखू, जाहिमे छात्र-जीवनक चर्चा हो। 6 x 1 = 6

अथवा, अपन क्षेत्रमे मच्छरक प्रकोपक वर्णन करैत स्वास्थ्य अधिकारीकँ पत्र लिखू।

8. संक्षेपण करूः 4x 1 = 4

यथार्थमे कन्यारत्न परमप्रीति ओ अनुकम्पाक पात्र होइत अछि। मनुओ अपन धर्म संहितामे

पौत्र एवं दौहित्रके ँ तुल्य मानैत छथि। अनन्तर कतेक देवता-पितरक आराधना सँ बहुत दिने

एक कन्या जन्म लेलथिन।

9. (क) संधिविच्छेद करू: 1 x 5 = 5

मनोरथ, निर्मल, निश्चल, नीरोग, निष्कलंक

(ख) वाक्य बनाउ: 1 x 5 = 5

विनती, आज्ञा, प्रसाद, हंस, कविता।

(ग) विपरीतार्थक शब्द लिखू:

1 x 5 = 5

उपकार, प्रभात, दिन, कृत्रिम, कायर।

(घ) समानार्थी शब्द लिखू:

1 x 5 = 5

बेटा, जल, धन, भगवान, सूर्य।

(ड़) समासक भेद लिखू:

1 x 5 = 5

(च) निम्न शब्द युग्मक अर्थ लिखू: 1 x 5 = 5

अविराम - अभिराम

पानि- पाणि

वर - बर

द्वारा - दारा

नाति - नीति।

***

उत्तर ANSWER

1. I. (i) – क, (ii) – ख, (iii) – क, (iv) – ख, (v) – ग।

II. (i) – घ, (ii) – ग, (iii) – ख, (iv) – क, (v) – ङ।

III. (क) विष्ठी, (ख) नचारी, (ग) मैथिल, (घ) लालदास, (ङ) कथा।

2. (क) गाममे ताराकेँ माए, दू टा छोट भाय-बहिन, मैंयाँ, पीसी, काका, काकी रहथिन।

(ख) 'ललका पाग' क नायिका छलीह त्रिपुरा। हिनका लोक 'तिरू' कहैत छलनि।

(ग) 'सोहरमे' भगवान श्रीकृष्णक विषयमे कहल गेल अछि।

(घ) 'छुतहर' कविताक रचयिता छथि काशीकांत मिश्र 'मधुप'।

(ङ) 'सीमन्तिनीक' रचनाकार छथि म० म० परमेश्वर झा।

3. (क) जाड़क ऋतु आबि गेल छैक। ज्योतिरीश्वर अपन 'वर्णरत्नाकर', जे चौदहम शताब्दीमे लिखल गेल छल, कहलनि अछि कि जाड़ मासमे ओस बहुत खसैत छैक। कुन्द पुष्प फुलाइत छैक। रात्रिमे लोक आराम करैत अछि, किएक तँ राति पैघ भऽ जाइत छैक।

अथवा

प्रस्तुत प्रसंग 'रूना' कथासँ लेल गेल अछि। एकर लेखक छथि स्व. मनमोहन झा। रूनाक पति सेनामे छलैक। रूना ओकर प्रतीक्षा करैत छल। ओ लेखक

द्वारा पतिकेँ संवाद पठबैत अछि मुदा पतितेँ युद्धमे मारल गेल छलैक। सैनिकक स्वभावसँ परिचय करबैत कथाकार कहैत छथि जे सैनिकके ँ अपना पर गर्व रहैत छैक। ओ बलिदानी पुरुष अपन समक्ष सभके ँ तुच्छ बुझैत अछि।

(ख) प्रस्तुत उद्धरण लालदास रचित 'जानकी परिणय' पदसँ अछि। श्रीराम सीतासँ विवाह

करबाक लेल मण्डपमे अएलाह अछि। सीता सेहो ओएत अयलीह तथा मिथिलाक परम्पराक

अनुसारें गीतक गायन प्रारम्भ भेल।

अथवा

प्रस्तुत पद्यांश काशीकान्त मिश्र 'मधुप' रचित 'छुतहर' कवितासँ लेल गेल अछि। कवि

ईश्वरक विषयमे कहैत छथि जे ब्रह्माण्डक कण-कणमे वास करैत छथि। अविद्यासँ ओ

अनेक देखाइत छथि। वेदान्तीलोकनि हमर पवित्र जलकेँ अपवित्र कहि निरादर करैत छथि।

4. **(क)** सोहर शीर्षक कविताक रचयिता हर्षनाथ झा छथि जे विद्यापति सम्प्रदायक अंतिम कवि छलाह। प्रौढ़ कल्पनाशक्ति ओ भाषाक सौष्ठव हुनक रचनाक विशेषता अछि।

कृष्ण जन्मक सुअवसर पर नन्द भवनक समक्ष हर्षोल्लासक संग लोकके ँ उपहार देल जाइत अछि। देवता ओ ऋषिगण सेहो उपस्थित छथि। गगनसँ पुष्पक वर्षा भऽ रहल अछि। नन्द मणि-मुक्ता लूटा रहल छथि।

कवि हर्षनाथ अपन आश्रयदाता म. लक्ष्मीश्वर सिंहक लेल कल्याणक कामना करैत छथि।

अथवा

प्रस्तुत निबन्धक रचियता छथि श्री भाग्यनारायण झा। डॉ.सी.वी. रमण एशियाक प्रथम वैज्ञानिक छलाह जनिका 1930 ई. क नोबल पुरस्कार प्राप्त भेलनि। रमण केँ नेनहिसँ विज्ञानमे रुचि छलन्हि। ओ बारह वर्षक अवस्थामे दसम वर्गक परीक्षा नीक अंकसँ पास कलयनि। 1904 ई. मे ओ.बी.एस-सी. परीक्षा नीक अंकसँ पास कयलनि।

(ख) मायानन्द मिश्रक 'टुटैत कीलक जाँत' शीर्षक कथाक अध्ययन उपरान्त हुनक अद्‌भुत कथा-लेखनक ज्ञान होइत अछि। एकर नायिका अछि रागिनी जनिक मानसिक अवस्थाक चित्रण एहि कथामे भेल अछि। ओकर दू बहिन रेखा आ अरेखा विवाहक

बाद सासुर चलि गेलैक। एक बहिन सुरेखा अविवाहित छैक। लकबा ओ दम्मासँ पीड़ित अछि। ओ स्कूल शिक्षिका अछि। संयोग सँ एक दिन चीनीक अभावमे ओ चाह नहि पीबि सकल। ओकर मोन तामससँ घोर भऽ गेलैक। विद्यालयमे ओ दाइसँ लड़ए लागल। मिसेज खन्नासँ लड़ए लागल। पिता पर बरसि पड़ल। पुनः ओकरा अपन गलती सुझा जाइत छैक तथा ओ क्षमायाचना करैत अछि।

अथवा

मायानन्द मिश्रक टुटैत कीलक जाँत कथा इएह शिक्षा दैत अछि जे प्रतिपल जीवनक संघर्ष सँ जुझैत रागिनी अपन परिवारक लेल त्याग करैत अछि, मुदा एक दिन चाह नहि भेटला पर ओ अकारण क्रुद्ध भऽ अनुचित व्यवहार कऽ बेसैत अछि।

6. (क) छात्र ओ राजनीति- 'छात्र' शब्दक अर्थ होइछ 'छत्र', जे अर्थात् छत्ता जकाँ शीलवान।

तात्पर्य अछि संतप्क रक्षा कएनिहार। 'छत्र' का व्याख्या अछि- ''रौद वृष्टि निवारणार्थवरण

विशेषः'' जे रौद ओ वर्षाक निवारण मे आवरणक कार्य करए। तँ छात्रहु कँ छते जकाँ शील सँ युक्त होएबाक चाही जे संतप्त लोकक रक्षा कऽ सकए।

प्राचीनकाल मे आचार्यलोकनि सम्पूर्ण मानव जीवन कँ चारि भाग मे विभक्त

कएने छलाह–ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ ओ संन्यास। ई चारू आश्रम नाम सँ सेहो जानल जाइत छल। एहिमे पहिल आश्रम अध्ययन, मनन ओ चिन्तनक लेल सुरक्षित राखल जाइत छल। ब्रह्मचर्याश्रम जीवन व्यतीत कए जखन छात्र गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करैत छलाह तँ हुनका पर पारिवारिक बोझक संगहि आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक बोझ सेहो स्वतः आबि जाइत छल।

राजनीति मे छात्रक सहयोग अपेक्षा भारतक स्वतंत्रता–आन्दोलन मे सर्वप्रथम महात्मा गाँधी 1920–22 ई. मे सत्याग्रह ओ असहयोग आन्दोलन मे कएलनि। अंगरेजक विरुद्ध समस्त भारतवासीक लेल ई चुनौती ओ अग्नि–परीक्षाक समय छल। हजार के हजार छात्र अध्ययन छोड़ि एहि आन्दोलनमे कूदि पड़लाह आ एकरा सफल बनाए राष्ट्र कँ स्वतंत्र कएलनि। तत्पश्चात् राजनीति मे हुनक भागीदारीक अपेक्षा ने तँ नेतालोकनि द्वारा कएल गेल आ' ने छात्रेलोकनि राजनीति कँ कार्य क्षेत्र बनाएब उचित बुझलनि।

विगत किछु वर्ष सँ ओ प्रमुख रूप सँ राज्य सभक तथाकथित कलियुगिया नेतालोकनि चुनाव जितबा ओ अपन स्वार्थसिद्ध करबाक लेल छात्रलोकनि कँ राजनीतिक हथियारक रूप मे अनर्गल प्रलोभन दए प्रविष्ट करबाबए लगलाह। तेजस्वी छात्र तँ नहि परंच भुसकौल ओ आपराधिक प्रवृत्तिबला छात्र लेल जेना राजनीति मे

प्रवेश सुन्दर संयोग बनि गेल। एतबे नहि विश्वविद्यालय सभ मे छात्र-संगठनक स्थापना करबाओल गेल। धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, जाति ओ वर्गक नाम पर छात्रक विविध प्रकारक संगठन राज्य सँ लए राष्ट्रीय स्तर धरि बनैत चल गेल आ कोनो ने कोनो पार्टी सँ ई लोकनि संगठनक सम्बद्धता प्राप्त करैत गेलाह। आइ राजनेतालोकनि अपन कुर्सी कँ स्थायी करबाक लेल छात्र वर्ग कँ अपन चुनाव-युद्धक सैनिक बना लेलनि अछि। चुनाव मे छात्रदल नाना प्रकारक नीक-अधलाह काज करबैत छथि। चुनाओं जितलाक बाद जखन ई नेतालोकनि मंत्री आदि बनि जाइत छथि, तखन तँ अपन गोटी बैसेबासँ फुरसति कतए? तखन ई छात्रलोकनि नेताक पाछू नुरियाएल घुमैत छथि। ऑस्टिन लिखने छथि- 'राजनीतिज्ञ पारा-सदृश छथि। जँ ओहि पर आंगुर रखबाक प्रयत्न करी तँ ओकरा नीचा मे किछु नहि भेटत।''

आइ हमरा देशक राजनीति सम्प्रदाय, स्वार्थ जाति इत्यादिक चांगुर मे पड़ि प्रदूषित भए गेल अछि। आपराधिक तत्त्व राजनीति पर हावी भेल जाइत अछि। राजसत्ते जखन अत्याचारी भए जाए तँ अत्याचारी राजसन्ताक अंग बनि जाइछ। एहि ठाम तँ अपराधक सेहो राजनीतिकरण भए जाइत आएि। तँ की छात्र अपन अध्ययन कँ छोड़ि, ज्ञानवर्द्धनक अमूल्य समय नष्ट कए, भ्रष्ट राजनीतिक दल-दल में फँसि अपन स्वर्णिम जीवन कँ नारकीय बना लेथि? गाँधी, तिलक, राजेन्द्र बाबू, सुभाषचन्द्र बोस,

पंडित नेहरू इत्यादि अपन अध्ययन समाप्त कएलाक पश्चाते राजनीति मे कूदल छलाह ओ तँ आत्मबल, नैतिकता ओ सद्विवेकसँ राष्ट्रक राजनीतिक संचालन कएलनि। की आजुक राजनीति मे जाहि हिंसा, शोषण, बलात्कार, अपहरण कँ प्रश्रय भेटि रहल अछि तकर छुतिओ मात्र हमर उपर्युक्त राजनेतालोकनि मे छलनि? तँ छात्रगण के ँ राजनीति मे प्रवेश करवा सँ पूर्व अपन भविष्यक निर्माण कऽ लेबाक चाही। जे छात्र स्वयं योग्य नहि बनि सकलाह ओ समाज, राष्ट्र ओ जनहित विषय मे कतेक योग्यताक प्रदर्शन कए सकैत छथि।

एहि आधार पर छात्र कँ राजनीति सँ छात्रावस्था मे कथमपि तादात्मक स्थापित नहि करबाक चाही। लोकमान्य तिलक जे राजनीति साधुक लेल नहि अछि। डिजराइल राजनीति कें द्यूतक्रीड़ा मानलनि अछि- ''There is no gambling like politics'' एक अन्य विचारक तँ राजनीति कँ लफंगाक खेल कहलनि अछि- ''Politics is the game of Scoundrels'' तँ छात्र कँ छात्र-जीवन मे सक्रिय राजनीति सँ फराके रहबाक चाही।

(ख) सरस्वती पूजा- ई पूजा शुद्ध कऽ विद्याध्ययन अर्थात् पठन-पाठन काजमे जे लागल छथि ओलोकनि विशेष कऽ श्रद्धापूर्वक जाहि संस्थामे पठन-पाठन करैत छथि ताहि संस्थामे धूम-धाम सँ करैत छथि।

ई माघ मासक शुक्लपक्षक पञ्चमी तिथिकेँ कएल जाइत अछि। एहि पंचमीकेँ श्रीपञ्चमीक नामसँ सेहो सम्बोधित कएल जाइत अछि। एहि तिथि कऽ छात्रलोकनि स्कूल वा कॉलेजमे पढ़ैत। छथि ताहिमे अथवा छात्रावासे मे जगद्धात्री विद्यादायिनी सरस्वती माताक मृत्तिकाक प्रतिमा आनि श्रद्धापूर्वक पवित्र जगह पर ठाँव कऽ बैसबैत अछि। पुनः पण्डितकेँ बजा हुनका द्वारा कहल गेल नियमानुकुल पूजा करैत छथि।

एहि तिथि कऽ पूजाकर्त्ता प्रातः काल नित्यकर्मसँ निवृत भेलाक बाद पूजास्थान पर आसन लए बैसैत छथि। तखन शुद्धि मन्त्रक पाठ कऽ पूजाक सामग्री तथा अन्तःकरणकेँ शुद्ध कऽ पण्डित जी द्वारा निर्देशित विधिसँ ध्यान, पूजा आ आरती करैत छथि। छात्रलोकनि मन्त्रक पाठ कऽ श्रद्धापूर्वक पुष्पाञ्जलि दैत छथि। तखन प्रसाद वितरण कएल जाइत अछि। प्रसादमे सामयिक फल बैर आ केशौरक प्रधानता रहैत अछि।

प्रसाद वितरणक पश्चात् छात्रलोकनि गीत-नादक संग-संग कीर्तन-भजन कैरत छथि। सन्ध्या समयमे पुनः आरती कएल जाइत अछि। तदुपरान्त रात्रि जागरणक लेल नाटक वा नाच-गानक व्यवस्था चलैत रहैत अछि।

प्रातःकालः पूजा-अर्चना क पञ्चमी बितला पर षष्ठीमे हिनकर प्रतिमाकेँ विसर्जन कऽ देल जाइत अछि। तखन शंखनाद करैत प्रतिमाकेँ उठाकऽ भ्रमण करैत धार वा

पोखरिमे प्रवाह कए देल जाइत अछि। छात्रक लेल एहि सँ बढ़ि कोनो पर्व नहि मानल जाइत अछि।

पूर्वमे ई पूजा शिक्षण संस्थान मात्र मे होइत छल, लेकिन आइ-काल्हि सर्वत्र जेना छात्रावास, पुस्कालय आदिक संग आब तऽ घरे-घर पूजा होबय लागल अछि। आइ-काल्हि एहि नाम पर बहुत ठाम शान्तियो भंग भए जाइत अछि। अराजक तत्त्व बलजोरी एहि नाम पर चन्दा एकत्र कए ओहिसँ फुटानि करैत अछि।

जँ एहि स्थिति पर ध्यान नहि देल जाएत तऽ भविष्यमे एहन जे महान पूजा ताहिसँ लोक विमुख होबए लागत।

(ग) पुस्तकालय उपयोगिता

पुस्तकालयक सन्धि-विच्छेद होइछ - पुस्तक+आलय। एकर सामान्य अर्थ भेल पोथीघर, परंच एकर तात्पर्य पोथीक गोदाम नहि, अपितु ज्ञान भंडार अछि, जएत रंग-विरंगक ज्ञान-पिपासु ओ जिज्ञासु अपन जिज्ञासा शान्त करबाक लेल अबैत-जाइत रहैत छथि, जेना। स्वास्थयक लेल भोजन आवश्यक अछि तहिना मानवक मानसिक विकासक लेल पोथीक अध्ययन आवश्यक अछि। जाहि घर मे पोथीक किछुओ संग्रह नहि रहए ओ घरे घर नहि थिक। एकटा विद्वानक कथन छन्हि-

"A house without books is a body without soul" अर्थात् बिनु पोथीक घर बिनु

आत्माक शरीर थिक। वास्तवमे पोथी सँ आकर्षक कोनो सुन्दर उपस्कर नहि सकैत अछि। केओ एक व्यक्ति सभ विषयक कोन कथा एको विषयक सब पुस्तक खरीद कए एकत्र नहि कए सकैत अछि। सजाओल घर सँ कतेक प्राचीन पुस्तक दुर्लभ भए गेल अछि। अतएव ज्ञान-गंगा सभक लेल उपलब्ध भए सकए, तँ पुस्तकालय स्थापनाक आवश्यकता भेल। पुस्तकालय कतोक प्रकारक होएत अछि-

(1) सार्वजनिक पुस्तकालय, (2) संस्थागत पुस्तकालय, (3) वैयक्तिक पुस्तकालय, (4)

राजकीय पुस्तकालय, (5) राष्ट्रीय पुस्तकालय, (6) चलन्त पुस्तकालय इत्यादि। सार्वजनिक पुस्तकालय सभक लेल खुजला रहैत अछि। संस्थागत पुस्तकालय विद्यालय, महाविद्यालय ओ विश्वविद्यालय स्तर पर उपलब्ध रहैछ, जतए सँ ओतुक्का छात्र ओ शिक्षक वर्ग लाभान्वित होइत छथि। वैयक्तिक पुस्तकालय विद्याव्यसनीक वैयक्तिक उपयोगक लेल होइत अछि। विश्वक पैद्य-पैद्य विद्वानक ओतए पुस्तकक विशाल संग्रह भेटत जे प्रायः अपन जीवनकाल मे कोनो संस्था करैत कँ दान कए दैत छथिन्ह, जेना-महर्षि अरविन्द अपन पुस्तकक विशाल संग्रह बड़ौदा विश्वविद्यालय कँ दान कएल। बिहार में डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा, खुदाबक्स खाँ,

डॉ. श्रीकृष्ण सिंहक वैयक्तिक पुस्तकालय आब सार्वजनिक पुस्तकालय बनि गेल

अछि।

एकर अतिरिक्त प्रत्येक राष्ट्रमे एक राष्ट्रीय पुस्तकालय होइत अछि। अपन देश मे नेशलन लाइब्रेरी अछि, परंच ई दुर्भाग्यक विषय अछि जे अपन देश मे एहन कोनो पुस्तकालय नहि अछि, जतए कोनो विषयक समस्त उत्तम पुस्तक उपलब्ध भए जाए।

विश्वक सभसँ पैघ पुस्तकालय 'कॉग्रेसी लाइब्रेरी' अमरीकाक वाशिंगटन मे अछि। एकर नेओ 24 अप्रैल, 1800 मे अमरीकाक दोसर राष्ट्रपति जान एडम्सक समय मे पड़ल। 1982 धरि एहि मे पुस्तकक संख्या पाँच करोड़ बियालीस लाख निनानवे हजार छल जे एकटा विश्व रेकॉर्ड अछि। एहि पुस्तकालय मे पन्द्रह लाखक संख्या मे पोथी प्रतिवर्ष बढ़ैत अछि। संगीतक रेकॉर्ड ओ टेपक विश्वक सब सँ पैघ संग्रहालय अछि। एहि रूपेँ आर्थिक रूप सँ सम्पन्न भेलाक कारणेँ अमरीकाक ई कांग्रेस लाइब्रेरी विश्वक सबसँ सम्पन्न अछि।

पुस्तकालय सब पोथी पढ़ले जाए से आवश्यक नहि, किछु तँ प्रदर्शनोक लेल रहैत अछि। किछु पोथी स्वाद बदलबाक लेल होइछ; किछु पूर्ण रूप सँ आत्मसात करबाक लेल होइछ। प्रसिद्ध पाश्चात्य लेखक बेकन लिखने छथि- "Some books are to be tasted, othrers to be swaloowed and some few to be chewed and digested"

एक विद्वानक मंतव्य छन्हि जे जँ एक दिश सुन्दर राजा ओ दोसर दिश सुन्दर

पुस्तकालय राखल जाए तँ ओ सुन्दर पुस्तकाल पसिन्न करताह। पुस्तकालय कँ देवमंदिर ओ तपोवन सँ तुलना कएल जा सकैत अछि, जतए बैसि लोक मनोविनोद, आत्मा कँ तृप्त ओ मानसिक तुष्टि प्राप्त कर सकैत अछि। ज्ञान विस्तारक लेल एकरा ज्ञान-केन्द्र कहि सकैत छी, जतए व्यक्ति अपन भविष्य-निर्माण ओ प्रगति पथ कँ प्रशस्त कए सकैत अछि।

7.

प्रिय प्रियंक,

परीक्षा- भवन

सप्रेम नमस्कार!

तिथि: 20-01-16

हम सकुशल छी। अहाँक कुशलक आकांक्षी छी। अहाँक चिट्ठी भेटल। सभ समाचार ज्ञात भेल। एहि पत्रमे हम छात्र-जीवनक चर्चा कए रहल छी। जीवनक सभ अवस्थासँ छात्र-जीवनक विशिष्ट महत्त्व छैक। एहि जीवनमे सांसारिक बातक कोनो चिन्ता नहि रहैत छैक। ई जीवन अमूल्य होइत अछि। एकरा जे दुरुपयोग करैत छथि ओ सम्पूर्ण जीवन पश्चाताप करैत छथि। पाछाँ पछतेलासँ की? अत: छात्र अपन समय अध्ययन

एवं ज्ञानार्जन मे बिताबथि; ओ क्षण-क्षणकेँ सुदपयोग करथि। अपन स्वास्थ्य तथा आचरणपर पूर्ण देथि। अपन शिक्षकलोकनिक आदेशक पालन करथि। नियमित रूपेँ विद्यालय जाएब, खेल-धूप एवं व्यायामसे भाग लेब, अपन संगी सभसँ प्रेम-पूर्ण व्यवहार करब, संयम तथा सदाचार अहाँक जीवनधार होएबाक चाही। महापुरुषक जीवनीसँ छात्र प्रेरणा ग्रहण करथि। वास्तवमे छात्र-जीवन ढाँचा नीक होइछ, जाहिमे जीवनक रूप ढलैत छैक।

आशा अछि जे अहाँ हमर पिचारसँ सहमत होएब आ पन्नोत्तर शीघ्र देब।

श्री सत्यम्

ग्राम+पो०- मधुपुर अहाँक स्नेही

मित्र,

जिला- दरभंगा

गणेश

8. **शीर्षक**- सीमन्तिनी।

कन्यारत्न समाजक हेतु दुर्लभ छथि; पुत्र ओ पुत्रीमे विभेद नहि करबाक थिक।

9. **(क)** मनः + रथ, निः + मल, निः + चल, निः + रोग, निः + कलंक।

(ख) विनती - विद्यापति गंगाक विनती लिखलनि।

आज्ञा – पिताक आज्ञासँ राम वन गमन कएलनि।

प्रसाद – पूजाक पश्चात् प्रसाद ग्रहण करी।

हंस – सरस्वती वाहन हंस थिक।

कविता – कवि कविता लिखैत छथि।

(ग) अपकार, संध्या, रात्रि, प्राकृतिक, वीर।

(घ) बेटा – सुत, तनय जल– पानि, वारि

धन– संपत्ति, संपदा भगवान – ईश, ईश्वर

सूर्य– दिनकर, रवि

(ङ) मैथिलीमे समासक तीन भेद होइत अछि।

i. **तत्पुरुष**– जाहिठाम दोसर पद प्रधान हो। जेना– दानवीर।

ii. **द्वन्द्व**– जतए दूनू पद प्रधान हो। जेना–धीया–पूता।

iii. **बहुव्रीहि**– जतए सामान्य अर्थसँ भिन्न अर्थक बोध होइत अछि। जेना–

कनकट्टा– कान छैक कटल जकर।

(च) अविराम– निरन्तर अभिराम– सुन्दर

वर– दूल्हा बर– बहुत

द्वारा– मार्फत दारा– पत्नी

नाति- बेटीक पुत्र

नीति- नियम

***

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

MAITHLI **मैथिली**

Set-IV

MODEL PAPER, SET – IV

समय : 3 घंण्टा + 15 मिनट

पूर्णांक : 100

परीक्षार्थी क लेल निर्देश: देखू Model Paper, Set - I क निर्देश।

1. **I**. निम्न बहुवैकल्पिक उत्तर मे सही लिखू: 5 x 1 = 5

i. 'सोहर' शीर्षक पदक कवि छथि:

(क) हर्षनाथ (ख) मनबोध

(ग) मंत्रेश्वर झा (घ) मार्कण्डेय प्रवासी

ii. पंडित गोविन्द झाक रचना अछि:

(क) उठह कृषक (ख) नूतन स्वर

(ग) शरद संगीत (घ) मनुक्खक जीवन

iii. गद्यक विकास कोन काल मे भेल?

(क) आधुनिक कालमे (ख) शून्य कालमे

(ग) मध्य कालमे (घ) प्राचीन कालमे

iv. मैथिली साहित्यमे नचारीक लेखक छथि:

(क) डॉ० जगदीशचन्द्र झा (ख) मनमोहन झा

(ग) डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' (घ) ललित

v. मैथिली निबन्ध साहित्यक रूपरेखा लेखक छथि:

(क) डॉ० भीमनाथ झा (ख) भाग्यनारायण झा

(ग) डॉ० जगदीश चन्द्र झा (घ) मनमोहन झा

II. सही जोड़ाक मिलान करू: 1 x 5 = 5

(i) पर्ल एक बक (क) छुतहर

(ii) काशीकांत मिश्र 'मधुप' (ख) चानीक तितली

(iii) आरसी प्रसाद सिंह (ग) नूतन स्वर

(iv) पं० गोविन्द झा (घ) उठह कृषक

(v) सोमदेव (घ) बाढ़िक हकरोस

III. रिक्त स्थानक पूर्ति करू: 1 x 5 = 5

(क) ..... एहना विषयमे वृद्ध लोकसँ परामर्श करबे उचित थिक, शास्त्रीय विचारमे संकोच की?

(पृथ्वीनाथ/गगननाथ)

(ख) परन्तु हमर तुच्छ बुद्धिमे एहि सिद्धांतक प्रसंग ..... अछि।

(विदेह/संदेह)

(ग) एकता आ राष्ट्रक शक्तिमे अभिन्न ..... अछि।

(संबंध/अनुबंध)

(घ) रूनासँ हम ..... छलहुँ से नहि

(परिचित/अपरिचित)

(ड़) अत्याचारी सभक ..... हो।

(नाश/विकास)

2. निम्नलिखित लघु उत्तरीय प्रश्नक उत्तर संक्षेप मे लिखू: 2 x 6 = 12

(क) 'बड़ा दिनक धूमधाम' मे लेखक की कहलनि अछि?

(ख) डॉ० सी०वी० रमणक जन्म कतय भेल छलनि?

(ग) इनर राजाकेँ प्रसन्न करबाक लेल गागमे कोन टोटमा कएल जाएत अछि?

(घ) 'हाथीक दाँत' मे एकांकीकारक की उद्देश्य छनि?

(ड़) गंगानाथ झा किएक कहलनि जे अंधोगतिक विचार चित्तमे नहि आनक थिक?

(च) वैदिक कालसँ लऽ कऽ आइ धरि हमर देश सदैव आभ्यन्तरिक राष्ट्रीय एकताक अनुभव

करैत आयल अछि। एहि उक्तिक विवेचना करू।

3. सप्रसंग व्याख्या करू: 2 x 4 = 8

(क) सत्यक सदा जीत होइत अछि। हमर समाज सत्यहि पर टिकल अछि से हम कहैत छी।

अथवा, व्यक्तिक उन्नतिसँ समुदायक उन्नति भए सकैत अछि। अधोगति करैत यथार्थत:

अधोगति भऽ जाइत अछि।

(ख) अर्थ स्पष्ट करू:

''तरुक सबद सुनि दौड़ल नन्द।

तेजि देल गाय परओ वरू बन्द।।''

अथवा ,

''शक्तिमान जग शक्तिक योग।

शक्ति विमुख शव सन सभ लोग।''

4. कोनहु दू दीर्घ उत्तरीय प्रश्नक उत्तर संक्षेपमे दिअ: 2 x 5 = 10

(क) 'ललका पाग' कथाक सारांश लिखू।

अथवा, 'बड़ा दिनक धूमधाम' शीर्षक निबन्धक समीक्षा करू।

(ख) 'जानकी परिणय' कथाक सारांश लिखू।

5. मैथिली साहित्यक मध्यकालक उपलब्धिक विषयमे संक्षिप्त मे लिखू। 1 x 5 = 5

6. कोनहु एक विषय पर निबन्ध लिखू। 1x 10 = 10

(क) कोनो महापुरुष जीवनी (ख) व्यस्क शिक्षा (ग) अहाँक प्रिय कवि।

7. गामक समस्यासँ अवगत करबैत मुखिया जी कँ पत्र लिखू 1 x 6 = 6

अथवा, अपन क्षेत्रमे नगरपालिका अध्यक्षकँ पत्र लिखू जे शहर मे सफाईक व्यवस्था पर

ध्यान देथि।

8. संक्षेपण करू: 4x 1 = 4

किन्तु वास्तवमे हम छलहुँ एक हविलदारक स्थान पर, डेढ़ सए दरमाह छल तथा 'मनीपुर

फ्रन्ट' पर नियुक्त छलहुँ।

9. (क) समासक भेद लिखू: 1 x 5 = 5

(ख) संधि-विच्छेद करू: 1 x 5 = 5

विद्यालय, नि:संकोच, मनोज, दुर्गम, महोत्सव।

(ग) विपरीतार्थक शब्द लिखू:

1 x 5 = 5

दोष, पाप, गुरू, नूतन, अधिक।

(घ) उपसर्गक परिभाषा दिअ।

1 x 5 = 5

(ड़) प्रत्ययक परिभाषा दिअ।

1 x 5 = 5

(च) पर्यायवाची दू शब्द लिखू: 1 x 5 = 5

फूल, अंग, गृह, संसार, साँप।

***

उत्तर ANSWER

1. I. (i) – क, (ii) – ख, (iii) – क, (iv) – ग, (v) – क।

II. (i) – ख, (ii) – क, (iii) – ङ, (iv) – ग, (v) – घ।

III. (क) पृथ्वीनाथ, (ख) संदेह, (ग) सम्बन्ध, (घ) अपरिचित, (ड़) नाश।

2. (क) एहिमे निबन्धकार जगदीशचन्द्र झा अपन लंदन प्रवासक अनुभव जीवन्त चित्र अंकित

कएने छथि।

(ख) डाँ० सी०वी० रमणक जन्म तमिलनाडु राज्यक शहर त्रिचनापल्लीमे भेल छलनि।

(ग) इनर राजाकेँ प्रसन्न करबाक लेल गाममे भरि राति जट/जटिनक गीत आ नाच आ बेंगक

कूटल जाइत अछि।

(घ) 'हाथीक दाँतक' क एकांकीकार आदर्शवादी विचारधाराक लोक छथि। दुष्ट ओ दुराचारीक

दमन हो इएह एकांकीकारक कहबाक उद्देश्य अछि।

(ड़) सदिखन अपनाकेँ दोसर सँ अधलाह बुझलासँ व्यक्तिक मोन मे हीनभावना उत्पन्न भ

जाइत छैक। उत्साहपूर्वक कार्य कएलासँ अपन त्रुटिकेँ दूर कए सकैत छी।

(च) आभ्यन्तरिक राष्ट्रीय एकता भारतक विशेषता थिक। हमरालोकनिक पूर्वज कैलाश सँ

कन्याकुमारी धरि तीर्थक स्थापना कयलनि।

3. **(क)** प्रस्तुत अवतरण डॉ प्रबोधनारायण सिंह रचित 'हाथीक दाँत' एकांकीसँ लेल गेल अछि।

नकली नेता टोपी पहिरि निरीह जनताकेँ ठकैत अछि, मुदा सत्य असत्यकेँ सदैव परास्त

करैत अछि।

अथवा

प्रस्तुत संदर्भ डॉ० सर गंगानाथ झा लिखित 'अधोगति' शीर्षक निबन्ध सँ लेल गेल अछि। व्यक्तिसँ समाज बनैत अछि। अपन हीनभावनाकेँ हटा क निरन्तर विकास दिस अग्रसर होयबाक थिक।

(ख) प्रस्तुत पद्यांश मनबोधक बाललीला सँ उद्धृत अछि। यमलार्जुन वृक्षक खसलाक शब्द

सुनि नन्द व्याकुल भऽ जाइत छथि। गायक परवाह नहि करैत ओ दौड़ि कऽ अपन घर

अबैत छथि।

अथवा

प्रस्तुत पद्यांश लालदास जानकी परिणय सँ लेल गेल अछि। कवि समस्त विश्वकेँ शक्तिमय

बुझैत छथि। शक्तिक महत्त्व राम सँ विशेष अछि।

4. **(क)** स्व. राजकमल चौधरीक 'ललका पाग' कथा मे राजकमल स्त्री हृदयक कोमल पक्षक

चित्रण कयलनि अछि। कमलपुरक त्रिपुरा नेनहिमे पिताक छत्रच्छायासँ दूर भऽ गेलीह। युवावस्थामे प्रवेश करिते विवाह कऽ सासुर अयलीह। पति राधाकान्त मेडिकल छात्र छलाह। सत सासु चननपुरवाली अपन पितिभौत भतीजी कामाख्यासँ अपन राधाकान्त विवाह कराबए चाहैत छथि। तिरू अपन सासु सँ हेलबाक प्रसंग पूछने छलीह, मुदा चननपुर वाली राधाकांतक हृदयमे तिरूक प्रति घृणा भाव भरि देलनि। तिरू परित्यक्ता भेलीह, मुदा सभ अत्याचार मूक भऽ सहैत रहलीह। राधाकांत दोसर विवाह तय होइत अछि। विवाहक लेल राधाकान्त विदा भेलाह। ललका पाग ताकल गेल। तिरू अपन बाकस सँ ओ निकालि पतिक हाथमे दैत छथि। राधाकान्त हृदय द्रवित भऽ जाइत छन्हि तथा ओ कानए लगैत छथि।

(ख) प्रस्तुत कविता 'रमेश्वररचित रामायण' क बालकांडसँ उद्धृत अछि। एहिठाम

धनुष भंग भेला पर ऋषि विश्वमित्र सँ सम्मति प्राप्त कऽ राजा जनकक दरबारक श्रीशोभा देखिकऽ बरिआती इन्द्रालयक आनन्दक अनुभव करैत छथि। बरिआतके अमृतोपम भोजन भेटैत छन्हि। अगहन मासक शुल्क पक्षक पंचमी तिथि मे जनकजी सीताक कन्यादान करैत छथि। अप्सरा, किन्नरगण, गन्धर्व इत्यादि सभ हर्षातिरेक सँ गीत गबैत अछि। वशिष्ठजी सूर्यवंशक परिचय देलनि एवं शतानंदजी चन्द्रवंशक विवरण प्रस्तुत कयलनि। राम-जानकीक पावन पाणिग्रहण संस्कारक सुअवसर पर आकाश सँ विविध रंगक पुष्पक वर्षा भए रहल छल जे देखि जन समुदायकेँ मन परम प्रमुदित भेलैक।

मैथिली साहित्यक मध्यकाल मे विद्यापति, मनबोध, गोविन्ददास, उमापति, लोचन इत्यादि कवि भेलाह। नाटकक विकास तीन स्थल पर भेल-मिथिला, असम ओ नेपाल मे।

6. (क) कोनो महापुरुष जीवनी- भारत महान पुरुषक जन्मस्थली मानक गेल अछि। ओ अपन जीवनक पदचिह्न देशवासीक भविष्य हेतु संबल छोड़ि जाइत छथि। पंडित जवाहरलाल नेहरू सेहो ओहि महान् लोक सब मे एक छलाह। हिनक जन्म 14 नवम्बर, 1889 मे प्रयागमे भेल छलनि। हिनक जन्मदिनकेँ देशमे बालदिवसक रूपमे मनाओल जाइत। हिनक पिताक नाम मोतीलाल नेहरू छल। ओ एकटा नामी ओकील

छलाह ओ हिनक पालन-पोसन पाश्चात्य ढंगसँ कएलनि। प्रारंभिक शिक्षा घर पर प्राप्त कए उच्च शिक्षा इंगलैंड हैरो पब्लिक स्कूलमे पौलन्हि। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय बी. एस-सी. डिग्री प्राप्त कए 'इनर टेम्पल' सँ वैरिस्ट्री पास कएलनि।

1912 ई० मे उच्च शिक्षा प्राप्त कए आपस भारत अएलाह। एहि ठाम अएलाक बाद बैरिस्ट्री आरम्भ कएलनि, लेकिन हुनका मोन नहि लगलनि। कारण हुनका छात्रावस्थेसँ राजनीतिमे अभिरुचि छलनि। ई दासताक विरूद्ध संग्राम शीर्षक पुस्तक बड़ चाओसँ पढ़ैत छलाह। हिनका कचहरीक वातावरण कटु लगनि। हिनका हृदयमे क्रांतिक आगि सुनगि रहल छल। तैं हिनका ओकालतक शांत जीवन नीरस लगलनि। 1916 ई० मे हिनक विवाह कमलाक संग भेल। हिनका कांग्रेसक लखनऊ अधिवेशनमे गाँधी जीसँ भेंट भेलनि। तखनसँ ओ गांधी जीक शिष्य बनि गेलाह। 1925 ई० मे पत्नीक चिकित्सा लेल यूरोप गेलाह।

पिता आ पत्नीक भारसँ मुक्त भए राष्ट्रसेवामे जुटि गेलाह। 1929 ई० मे लाहौर अधिवेशनमे ई कांग्रेसक सभापति चुनल गेलाह। ओहि अधिवेशनमे पूर्ण स्वतंत्रताक मांग घोषित कएल गेल। ई कांग्रेसकेँ नव जीवन देलनि। 1942 ई० मे 'भारत छोड़ो' आन्दोलन प्रारम्भ भेल। तखन ई जेल गेलाह। जेलहिमे ई पुत्रीक नाम पिताक पत्र आ भारत अन्वेषण आदि पोथीक रचना कएलनि। जेलसँ मुक्त भेलापर आन्दोलनक समस्त

भार अपन उपर लेलनि। एहि क्रममे ई कतेक बेर जेल गेलाह। 15 अगस्त, 1947 कऽ भारत स्वतंत्र भेल। स्वतंत्र भारतक स्थापना भेल। ई पंचशीलक सिद्धान्तकेँ निरूपित कएलनि। जीवन भरि प्रधानमंत्री रहि 27 मई, 1964 कऽ एहि लोककेँ त्यागि परलोक सिधारलआह, लेकिन देश सदा कृतज्ञ रहत; ओ मरियो कए अमर छथि।

(ख) वयस्क शिक्षा -साधारणत: लोक बाल्यावास्था मे शिक्षा ग्रहण करैत अछि, मुदा गाम-घरमें वास कएनिहार निर्धन आ निर्बल लोकक लेल करिआ अक्षर महीसक समान होइत अछि। एहि तरहक जे लोक छथि तिनके लेल जे शिक्षा देबाक व्यवस्था कएल गेल अछि, ओएह वयस्क शिक्षा कहबैत अछि।

प्राणी मात्रक हृदयमे उन्नतिक अभिलाषा रहैत छैक। उन्नतिशील लोक तखनहि होएत जखन कि ओकर सर्वांगीण विकास होएतैक। विकास तखनहि हेतैक जखन कि लोक शिक्षित रहत। कारण शिक्षाक अभावमे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आ कि धार्मिक कोनो क्षेत्रमे आगू बढ़ब सम्भव नहि छैक।

देशक अधिकांश आबादी अशिक्षित अछि। जाहिमे वयस्कक संख्या अत्यधिक अछि। जकरा शिक्षित करब देशक पुनीत कर्त्तव्य होइत छैक। कारण निरक्षरता व्यक्ति आ समाजक पैघ शत्रु अछि। ई मानव जीवनक लेल अभिशाप अछि। एहिसँ देशक उन्नतिमे बड़ पैघ बाधा उत्पन्न होइत छैक। सामाजिक आ कि व्यावहारिक जीवनमे लिखा-पढ़ीक अवसर पर अशिक्षित व्यक्ति तिनियो कौड़ीक नहि रहैत छथि। निरक्षर होएबाक कारण सदा ओ धूर्त्त आ बेईमान लोकक पालामे पड़ि

मारल जाइत छथि। ओ देश-विदेशक समाचारसँ अनभिज्ञ रहि कूपमंडूक बनल रहि जाइत छथि। ओ सदा ईर्ष्या-द्वेष आ फूटमे पड़ि समाजक उत्थानमे बाधक सिद्ध होइत अछि। अतः जाधरि घर-घरसँ निरक्षरताकेँ निकालल नहि जाएत ताधरि लोकक हृदयमे उदारता, स्वतंत्रता आ स्वाभिमानक भावक उदय नहि भए सकत। लिखा-पढ़ीक छोटसँ छोट काज लेज अनका आगू झुकब आ कृतज्ञता स्वीकार करब मनुष्यक लेल उचित नहि अछि। विश्वक प्रगतिशील मंच पर अग्रसर भेल भारतवासीक लेल ई कहब कथमपि शोभा नहि दैत अछि। अस्तु देशक सर्वतोमुखी विकास चाहनिहारक लेल वयस्क शिक्षाक प्रयोजन डेग-डेग पर अछि।

जौं देशक वयस्क शिक्षित नहि हेताह तऽ देशक सर्वांगीण विकासक कल्पना केनाइ एकटा कल्पना छोड़ि आर किछु नहि।

(ग) अहाँक प्रिय-कवि- मैथिली साहित्यकाश मे देदीप्यमान नक्षत्र जकाँ जे विगत छओ सए वर्ष सँ निरन्तर चमकैत आबि रहल छथि, सहए दिव्य-पुरुष, कवि-कोकिल विद्यापति हमर सर्वाधिक प्रिय कवि छथि। कालिदासक 'सर्वप्रिये चारुतरं वसन्ते- जकाँ कवि-कोकिल आइ सभक प्रिय कवि बनि गेल छथि। महाकविक आविर्भाव काल मे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक ओ राजनीतिक दृष्टिकोण सँ मिथिले नहि, समस्त आर्यावर्त संक्रान्ति-काल सँ गुजरि रहल छल। देश मे मुसलमानी सल्तनत भेलाक कारण हिन्दू धर्म जो संस्कृति बाँचव अत्यन्त कठिन भए गेल छल। एहि भीषण संकटक घड़ी मे महाकविक काव्य-रचना महान् प्रेरणा-स्रोतक कार्य कएलक। मानवक मानव-पीड़ा कँ जनसाधाारणक समक्ष प्रस्तुत कए अपन रचना कँ कालजयी बना

लेलनि। आहि समय धरि हिन्दी सहित्यो से सूर-तुलसी सन महान् साहित्यकारोक उदय नहि भेल छल। महाकविक रचना सँ प्रभावित भए हरिवंश राय 'बच्चन' खिलने छथि-

''थे न सूर न कबीर न तुलसी
औ न थी जब बावड़ी मीरा,
तब तुम्हीं ने मुखरित की थी
मानव के मानस की पीड़ा।''

तँ हिन्दीओ साहित्यक इतिहासकारलोकनि मुक्त कंठ सँ महाकवि कँ हिन्दीओ सहित्यक प्रथम कविक रूप मे स्वीकार कएलनि अछि। संस्कृत, मैथिली ओ हिन्दी तीनू साहित्य मे महाकविक नाम अत्यन्त आदरक संग लेल जाएत अछि। ओना भाषाक दृष्टि सँ महाकविक रचना क्रमशः संस्कृत, अवहट्ट ओ मैथिली पदावली तीन भाषा मे उपलब्ध होइत अछि। संस्कृतक प्रमुख रचना अछि-'पुरुष परीक्षा', 'लिखनावली', 'भू-परिक्रमण', 'दानवाक्यावली', 'गंगावाक्यवाली', 'दुर्गा भक्ति-तरंगिनी', 'गया पत्तलक', 'वर्षकृत्य' इत्यादि। अवहट्ट भाषा मे 'कीर्तिलता' ओ 'कीर्तिपताका' टुइ गोट रचना अछि। तेसर भाषाक ओ नव कोटिक जे प्रशस्त रचना अछि जाहि पर महाकवि कँ एतेक ख्याति ओ लोकप्रियता प्राप्त भेलनि, से थिक हिनक कोमलकातन्‍ पदावली साहित्य। हिनक पदावलीक ख्याति मिथिलाक सीमा कँ टपि बंगाल ओ असम धरि पसरि गेल। बंगालक चैतन्य महाप्रभु महाकविक निम्न गीत

गबैत–गबैत ततेक तल्लीन भए जाइत छलाह जे अपन सुधि–बुधि बिसरि मूर्च्छित भए जाइत छलाह। गीतक पाँती अछि–

''सखि हे हमर दुखक नहि ओर।

ई भर बादर माह भादव,

शून्न मन्दिर मोर।''

वर्तमान शताब्दीक विश्व कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर जे बंगाले नहि, भारते नहि, अपितु विश्वक साहित्यिक पुरस्कर 'नोबेल पुरस्कार' सँ सम्मानित भेलाह, तनिको काव्य–रचनाक प्रेरणा महाकवि विद्यापतिक पदावली पढ़ि कँ भेटलनि; ओ ततेक प्रभावित भेलाह जे पदावलीक अनुकरण मे अपन सर्वप्रथम रचना 'भानु सिंहेर पदावली' नाम सँ लिखलनि, जे बाद मे 'ब्रजबुलि भाषा' क गति कहि सम्मानित भेल। विद्यापतिक विषय मे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ लिखने छथि–

अर्थात् हुनक (विद्यापतिक) कविता ओ गान हमर प्रारंभिक आह्लाद मे एक छल, जे हमर युवा कल्पना कँ उद्वेलित कएलक तथा हमरा तँ इहो सौभाग्य भेल जे ओहिमे एक कँ हम संगीत मे निबद्ध कएल।

संस्कृत पंडित भेलाक कारणें पहिने तँ महाकवि संस्कृते मे कतोक रास रचना प्रस्तुत कएलनि, तत्पश्चात् अवहट्ट रचना। एहि मे 'कीर्तिलता' क प्रथम पल्लव मे भाषाक प्रति हिनक गर्वोक्ति निम्न पाँती मे द्रष्टव्य अछि–

''बालचन्द विज्जावइ भाषा, दुहु नहि लग्गई दुज्जन हासा।

ओ परमेसर हर सिर सोहइ, ई निच्चई नाआर मन मोहइ॥''

पुनः संस्कृत, प्राकृत ओ अवहट्ट भाषाक गुण-दोषक विवेचन करैत अंत मे देशी भाषाक उत्कृष्टताक प्रतिपादन करैत महाकवि कहैत छथि-

''सक्कअ वाणी बहुन भावई, पाउअ रस को मम्म न पावइ।

देसिल बयना सब जन मिट्ठा, तजे तैसन जंपओ अवहट्टा॥''

अवहट्टक पश्चात् देशी भाषा अर्थात् जनभाषा वा लोकभाषा मे कहाकवि अपन सभसँ विशिष्ट रचना पदावलीक सर्जन कएलनि। जँ आन रचना कँ छोड़ि पदावली साहित्य मात्र पर दृष्टिपात कएल जाए तँ महाकवि कँ मैथिलीए साहित्य नहि, अपितु भारतीय भाषा-साहित्य मे अमरत्व प्राप्त करबाक लेल यथेष्ट अछि।

पदावली साहित्य मुख्यतः तीन कोटिक अछि- देवी-देवता विषयक भक्ति पद श्रृंगारिक पद ओ व्यावहारिक पद। तीनू कोटिक रचना उपर्युपरि अछि। भक्ति पदमे गोसाउनि, राधा-कृष्ण, गंगा, शंकर-पार्वती आदिक गीत,श्रृंगारिक पद मे राधा-कृष्ण कँ सामान्य पति-पत्नीक रूप मे ओ आध्यात्मिक रूपमे, व्यावहारिक पदमे मांगलिक अवसर ओ पावनि-तिहार सँ सम्बद्ध गीतक रचना प्रधान अछि। तीनू कोटिक रचना मे नारीक विविध स्वरूपक चित्रण अत्यन्त मार्मिक भेल अछि। नारी समाजक नाड़ीक धड़कन जेना महाकवि अपन कान सँ सुनैत होथि। गुप्त सँ गुप्त नारीक मनोदशाक चित्रण जेना पदावली मे सद्यः साकार भए उठल अछि।

एहि सब आधार पर महाकविक रचनाक विषय मे किछु कहब पिष्टपेषण मात्र होएत तथापि जतबा कविक विषय मे जानकारी प्राप्त भेल अछि, ताहि मे विद्यापति

हमरा सर्वाधिक प्रिय कवि छथि।

7. सेवा मे

मुखिया महोदय,

गाम पंचायत राज, सिंघिया, मधुबनी।

विषयः- गामक समस्याक प्रति ध्यान आकृष्टक लेल।

महाशय,

निवेदन अछि कि ग्राम मे सड़क, बिजली, स्वास्थ्य, सफाई इत्यादि समस्या सुरसाक मुँह जकाँ भयावह भेल अछि। एहि समस्या सभ पर विशेष ध्यान देबाक आवश्यकता अछि, जाहि सँ गामक विकास हो।

आशा अछि अपने एहि पर विशेष ध्यान देबाक कष्ट करबैकः सड़क, बिजली, अस्पताल इत्यादि व्यवस्था सँ ग्रामीणक जीवन सुखी होएतन्हि।

अपनेक शुभेच्छु,

रमेश मिश्र

ग्राम–सिघिंया

अथवा,

सेवा मे–

अध्यक्ष महोदय

दरभंगा नगर पालिका, बिहार।

महाश्य,

निवेदन अछि जे गामक सड़क बाढ़िक कारणेँ कतेको ठाम टूटि गेल अछि; तेँ आवागमन मे बड़ दिक्कत भऽ रहल छैक, अतः श्रीमानसँ निवेदन अछि जे सड़क ओ पानिक उत्तम व्यवस्था शीघ्रातिशीघ्र कराओल जाए। एहि कार्यक लेल ग्रामवासी अपनेक सदा आभारी रहताह।

भवदीय,

पनिचोभ गामक

निवासी

8. शीर्षक-सेनाक जीवन।

लेखक मनीपुर फ्रन्टक हविलदार छलाह, जाहिमे डेढ़ सए रुपैया दरमाहा छलन्हि।

9. समासक तीन भेद अछि-

(क) तत्पुरुष, द्वन्द्व तथा बहुब्रीहि।

(ख) विद्या + आलय, निः + संकोच, मनः + ज, दुः + गम, महा+उत्सव।

(ग) निर्दोष, पुण्य, शिष्य, पुरातन, कम।

(घ) जे शब्दक प्राम्भ मे लागि शब्दक अर्थ बलि दिअए, जेना-अप+ मान= अपमान।

(ङ) जे शब्दक अंत में लागि शब्दक अर्थ बदलि दिअए,

जेना–थकावट।

(च) **फूल** – पुष्प, सुमन।

अंग – शरीर, देह।

गृह – घर, गेह।

संसार– जगत, भुवन।

साँप – सर्प, भोगि।

***

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

MAITHLI **मैथिली**

Set-V

MODEL PAPER, SET – V

समय : 3 घंण्टा + 15 मिनट

पूर्णांक : 100

परीक्षार्थीक क लेल निर्देश : देखू Model Paper, Set - I क निर्देश।

1. **I.** निम्न बहुवैकल्पिक उत्तरमे सही लिखू: 1 x 5 = 5

(i) 'अधोगति' शीर्षकक निबन्धकार छथि:

(क) म. म. डॉ. सर गंगानाथ झा (ख) राजकमल

(ग) म. म. परमेश्वर झा (घ) कुमार गंगानंद सिंह

(ii) आरसी प्रसाद सिंहक रचना अछि:

(क) छुतहर (ख) चिनगी

(ग) नूतन स्वर (घ) बाढ़िक हकरोस

(iii) गद्यक विकास कोन काल में भेल:

(क) मध्य काल (ख) आधुनिक काल

(ग) प्राचीन काल (घ) अत्याधुनिक काल

(iv) 'ऋतु वर्णना' क रचयिता छथि:

(क) ज्योतिरीश्वर (ख) डॉ. भीमनाथ झा

(ग) डॉ. दुर्गानाा झा 'श्रीश' (घ) भारतीय

(v) गिरगिट कोन भाषाक / कथा थिक:

(क) रूसी (ख) अमेरिकन

(ग) फ्रेन्च (घ) भारतीय

II. सही जोड़ाक मिलान करू: 1 x 5 = 5

(i) गोविन्ददास	(क) हाथीक दाँत
(ii) प्रबोध नारायण सिंह	(ख) विद्यापति वन्दना
(iii) उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन'	(ग) शरद संगीत
(iv) गौरीकान्त चौधरी 'कान्त'	(घ) मनुक्खक जीवन
(vi) मंत्रेश्वर झा	(ड़) हम संस्कृति भारतवर्षक

III. रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू: 1 x 5 = 5

(क) ई ..... कतेक दिन आओर चलतैक?

(लड़ाई / बढ़ाई)

(ख) हमर समाज ..... पर टिकल अछि।

(सत्यहि/असत्यहि)

(ग) मिथिलामे विकसित शिवभक्ति रचना ..... ओ नचारी नाम सँ प्रसिद्ध अछि।

(गुरुवाणी/महेशवाणी)

(घ) इसाइ सभक ..... सभसँ पैघ पाबनि होइत छैक।

(क्रिसमस/दुर्गापूजा)

(ड़) आइ समस्त ..... इएह हाल छैक।

(बुद्धिजीवीक/अज्ञानीक)

2. III. निम्न लघु उत्तरीय प्रश्नक उत्तर संक्षेप मे लिखू:

2 x 5 = 10

(क) ओवरलोड कथामे ललितक कहबाक की उद्देश्य अछि?

(ख) डॉ. भीमनाथ झा 'मैथिली निबन्ध साहित्यक रूपरेखा' मे की कहलानि अछि?

(ग) 'बाललीला' मे कोन देवताक बाललीला अछि?

(घ)'राष्ट्रीय एकताक महत्त्व' सँ अहाँ की बुझैत छी?

(ङ) राजकमलक 'ललका पाग' कथाक नायक के छथि?

3. (क) सप्रसंग व्याख्या करू: 2 x 5 = 10

वृक्षक नूतनता, पल्लवक उद्‌गम, कुमुदक सम्भार, मलयानिलक वेग, कोकिलाक कलरव,भ्रमरक झङ्‌कार, कन्दर्पक प्रभाव।

अथवा, पृथ्वीनाथ! एहना विषयमे वृद्ध लोकसँ परामर्श करबे उचित थिक, शास्त्रीय विचारमे संकोच की?

(ख) अर्थ स्पष्ट करू:

''कतओक दिवस जखन बिति गेल

हरि पुनु हथगर गोड़गर भेल।

से कोन ठाम जतय नहि जाथि

कय बेरि अंगनहुँसँ बहराथि।''

अथवा,

''जनिक पद-रज-पूत मिथिला आइयो पावन कहाबथि,

अखिल वेद पुराण महिमा जनिक निःसंकेच गाबथि।''

4. कोनहु दू दीर्घ उत्तरीय प्रश्नक उत्तर संक्षेपमे दिअः

5 x 2 = 10

(क) 'ललका पाग' कथाक सारांश लिखू।

अथवा, 'मैथिली साहित्यमे नचारी' शीर्षक निबन्धक समीक्षा करू।

(ख) 'छुतहर' शीर्षक कविताक भावार्थ लिखू।

5. मैथिली साहित्यिक काल विभाजनक संक्षिप्त परिचय दिअ।

5 x 1 = 1

6. कोनहु एक विषय पर निबन्ध लिखूः

10 x 1 = 10

(क) अनुशासन (ख) कृषि क्षेत्र मे विज्ञानक चमत्कार

(ग) सहशिक्षा

7. अपन मित्रक नामसँ डेढ़ सए (150) शब्दमे एक पत्र लिखू, जाहिमे छात्रावास-जीवनक

गुणक चर्चा हो।

6 x 1 = 6

अथवा, विद्यालयमे खेलकूदक उचित व्यवस्थाक लेल प्रधानाचार्यकँ पत्र लिखू।

8. सक्षेपण करू:

4

सासुर आबि तिरू बड़ प्रसन्न भेलीह। कारण माय सुखक चरखा काटक लेल कलकत्ता गेबे

कयलथिन। कारण, ननगिलाटक ललका दसगज्जीक घोघ तरसँ ओ देखिए गेलथिन जे ओ बड्ड सुन्नरि छथि, सदिखन हँसिते रहैत अछि।

9. (क) निम्नलिखित मोहावराकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:

1 x 5 = 5

चुटकी लेब, अगिआ बेताल, अनेर-धुनेर, पाग राखब, काहि काटब

(ख) संधि विच्छेद करू:

1x5 = 5

विद्यालय, जगदीश्वर, महेश, नरेश, प्रत्येक, ।

(ग) समासक भेद सोदाहरण लिखू।

1 x 5 = 5

(घ) विपरीतार्थक शब्द लिखू: 1 x 5 = 5

गृहस्थ, ज्ञानी, सिर, कारी, दु:ख।

(ड़) समानार्थी शब्द लिखू: 1 x 5 = 5

गंगा, तालाब, चद्रमा, मेघ, पुत्र।

(च) शुद्ध करू: 1 x 5 = 5

(i) हम गाम जायत।

(ii) राम पोथी पढ़ब।

(iii) राधा कृष्णक प्रियतमा छलाह।

(iv) माय गेलाह।

(v) भाय अएलीह।

***

उत्तर (ANSWERS)

1. I. (i)- क, (ii) – घ, (iii) – ख, (iv) –क, (v) – क।

II. (i) – ख, (ii) – क, (iii) – ङ, (iv) – ग, (v) – घ।

III. (क) लड़ाई, (ख) सत्यहि, (ग) महेशवाणी, (घ) क्रिसमस, (ड़) बुद्धिजीवी।

2. (क) ललित ओवरलोड कथामे जनसंख्या नियंत्रण पर बल देलनि अछि। पैघ परिवारक भरण–पोषण लेल गृहस्वामी भ्रष्टाचारक अवलम्बन कऽ सकैत अछि।

(ख) मैथिली निबन्ध साहित्यक रूपरेखा मे निबन्धकेँ परिभाषित कऽ ओकर साहित्यिक समृद्धि पर अपन विचार व्यक्त कयलनि अछि।

(ग) 'बाललीला' शीर्षक पद मनबोधक 'कृष्ण जन्म' प्रबन्ध काव्य सँ लेल गेल अछि। एहि ग्रंथमे कृष्णक जन्म ओ विविध लीलाक चित्रण अछि।

(घ) प्रस्तुत निबन्ध मे लेखक कुमार गंगानंद सिंह कहने छथि जे कोनहु राष्ट्रक सुरक्षा, समृद्धि ओ विकास ओहि राष्ट्रक एकता पर निर्भर करैत छैक।

(ङ) राजकमलक 'ललका पाग' कथाक नायक छथि मेडिकल छात्र राधाकांत।

(च) नूतन स्वर कविताक रचयिता छथि पं. गोविन्द झा।

3. (क) प्रस्तुत उद्धरण ज्योतिरीश्वर रचित ऋतु वर्णनासँ उद्धृत अछि। वसन्त ऋतुक पदार्पण वृक्षमे नव पल्लव लागि गेल अछि। पुष्पक सुगंधसँ युक्त शीतल हवा बहि

रहत अछि। कोयलक काकली मुखर अछि। भ्रमर पुष्पक रस ग्रहण करबाक लेल गुंजन कऽ रहल अछि। कामदेवक प्रभाव सर्वत्र व्याप्त अछि।

अथवा

प्रस्तुत उद्धरण 'सीमन्तिनी' कथासँ लेल गेल अछि। कथाकार छथि म. म. परमेश्वर झा। कन्याक जन्म भेला पर राजा वृद्धजन ओ ज्योतिषीलोकनिसँ विचार कयलनि। एहि विषयक सभ सराहना कएलक।

(ख) प्रस्तुत उद्धरण मे कृष्ण जन्मक पश्चात् हुनक शारीरिक विकासक वर्णन कवि बाललीलामे कयलनि अछि। श्रीकृष्ण किछु दिनक पश्चात् हाथ पएर चलबए लगलाह। प्रत्येक स्थान पर बाल सुलभ चपलतासँ ओ भ्रमण करैत छलाह; यशोदाक नजरि बचाकऽ ओ आंगनसँ बहरा जाइत छलाह।

अथवा

प्रस्तुत पद 'आावाहन' शीर्षक कविता सँ उद्धृत अछि। भुवन जी एहि मे मिथिलाक पवित्र चरणक विषय मे कहैत छथि जनिका प्रताप सँ मिथिला आइओ पवित्र छथि। संपूर्ण वेद-पुराण महमा गबैत छथि।

4. (क) स्व० राजकमल चौधरी मैथिली साहित्यक समस्त विधामे नव प्रयोग कयलनि अछि। ललका पाग मे ओ मैथिल स्त्रीक धैर्य ओ सहनशीलताक परिचय देलनि अछि। कमलपुरक पं टेकनाथ झाक कन्या नेनहि मे पिताक स्नेहसँ वंचित भेलीह। भाय झिंगुरनाथ चंडीपुरक राधाकांत चौधरीसँ हुनक विवाह करबओ लनि। राधाकांतक सतमाय चननपुर वाली अपन पितियौत भायक बेटी कामाख्यासँ हुनक

विवाह करबए चाहैत छथि। दुरागमन दिन चननपुर वालीसँ तिरू पूछलथिन – माय अहाँ कँ पोखारिमे हेलए अबैत अछि? दोसर दिन सम्पूर्ण गाममे ई चर्चा क विषय बनि गेल जे कमलपुर वाली कनियाँ पोखारिमे नहाइत छलीह। राधाकान्त क्रोधित भऽ तिरूक परित्याग करैत छथि। चननपुर वालीकँ अवसर भेटि जाइत छन्हि तथा ओ कामाख्याक संग राधाकांतक विवाह निश्चित करैत छथि। तिरू सरल हृदया छलीह। राधाकान्तक दोसर विवाहक अवसर छलैक। ओ अपन विवाह वला ललका पाग आनि राधाकँ दैत छथि। राधाकांत कँ अपन पहिल विवाह मोन पड़ि जाइत छन्हि। ओ कानए लगैत छथि तथा तिरूक प्रति हुनक हृदय मे ममत्व जागि जाइत अछि।

अथवा,

'मैथिली साहित्यमे नचारी' निबन्धमे डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' मिथिलामे नचारीक सुदीर्घ परम्पराक उल्लेख कयलनि अछि। मिथिलामे शिवकपूजा तथा गाबि–गाबिकँ हुनका समक्ष आत्म–निवेदन करब नचारी द्वारा संभव होइत अछि। 'नचारी' मे 'लाचारी' क ध्वनि अबैत अछि पन्द्रहम शताब्दीक विद्यापतिक पदावली मे नचारी भेटैत अछि। मिथिलाक ओइनिवार राज्यक पतनक पश्चात् मैथिली साहित्यक गतिविधिक प्रमुख केन्द्र भऽ गेल नेपालक मल्ल नृपतिलोकनिक दरबार। ओहिठाम जे सांस्कृतिक विकास भेल से मिथिलेक परम्परा अनुसरण मे, अतः नचारीक वास्तविक स्वरूपक प्रसंग मिथिलासँ भनहि कोनो प्रमाण नहि भेटैत अछि, परन्तु गीत पंचाशिकासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे नचारीक ताहि समयमे कोनो अर्थ नहि छल जे मिथिला मे हमरा सभ बुझैत आबि रहल छी।

(ख) कविचूड़ामणि काशीकांत मिश्र 'मधुप' जनवादी कवि छथि। अपन कविताक माध्यमसँ ओ शोषण एवं अत्याचारक पूर्ण विरोध कएने छथि। छुतहरक अर्थ होइत छैक छुताएल घट, जकरा फराक राखल जाएत छैक। छुतहर कहि रहल अछि जे एक्के माटिसँ कुम्हार मंगल घटके मध्य हमरहु निर्माण कएलक। किछु दिन धरि हम मंगल घटक रूपमे सभ ठाम सम्मान पबैत छलहुँ। आइ अस्पृश्य भऽ गेलहुँ अछि कोनो पापक कारणे। आइ हमर प्रयोग गोबरौड़ रूपमे होइत अछि। हम रूपरानी, मृगनयनीक कटि पर तँ कखनो माथ पर चढ़ि भ्रमण करैत छलहुँ, मुदा आइ ओएह रूपसी देखिते मुँह घुमा लैत अछि। एहन शाप के देलक से नहि जानि? जे कुकुर कँ पलंग पर सुतबैत छथि ओहो हमरा देखि पड़ा जाइत अथि। एहि सृष्टिक घट-घट के परम ब्रह्म निवास करैत छथि।

5. मैथिली साहित्यक इतिहास कँ तीन कालमे विभक्त कएल जाइत अछि-प्राचीन काल, मध्य काल ओ आधुनिक का।

ज्योतिरीश्वर धरि प्राचीनकाल भेल अर्थात् प्रारंभ सँ 1350 ई० धरि। 1350 सँ 1860 ई० धरि मध्यकाल तथा 1860 ई० सँ अद्यपर्यन्त आधुनिक काल।

6. (क) अनुशासन- जाहि समाज मे आचार-विचार आ रहन-सहन जतेक सुन्दर ढंग सँ पालन हेतैक ओ समाज ओतेक शिष्ट आ सभ्य होयत। तैं अनुशासनकँ सभ्यताक पहिल सोपान कहल गेल अछि। अनुशासित समाज सदा विकासोन्मुख रहैत अछि। इएह कारण छैक व्यक्ति अपनासँ श्रेष्ठक आदर कखैत अछि। आ श्रेष्ठ व्यक्ति अपनासँ छोट कँ स्नेह दैत अछि। एहि तरहक शिष्टाचार समाजकँ एक अपूर्व बन्हनमे

रखैत अछि। अपनासँ श्रेष्ठक प्रति आदर कएनाइ शिष्टाचारक रूप धारण करैत अछि। करुणा आ सहानुभूति ओकर सहायता करैत छैक। आगत अतिथिक सत्कार कएनाइ अनुशासनक उद्देश्य मानल गेल अछि। एहि तरहें एक दोसराक प्रति प्रेमक मूल्य चमचम करैत हीरा जकाँ प्रमाणित होएत अछि।

एहन जे अनुशासन ताहिसँ समाजकेँ बड़ लाभ भेटैत छैक। अनुशासित व्यक्ति सदा नम्र होइत छथि। नम्रताकेँ लोक सफलताक सबसँ पैघ सोपान मानैत अछि। अनुशासनसँ समाजमे भ्रातृत्व भावक संचार होइत अछि। ताहिसँ सब अपनापन भावसँ आवद्ध भए एकताक पायाकेँ सबल बना दैत अछि। अनुशासन लोककेँ प्रेरणा दैत अछि जे ओ अपन माता-पिताकेँ संगहि परिवारक आओर श्रेष्ठ व्यक्तिक पूजा करए आ हुनक योग्य पुजेगरी प्रमाणित हेबाक लेल इच्छुक रहए। फलस्वरूप आइ जे पुजेगरी अछि, से निश्चित काल्हि ओहो पूज्य बनत। एहिसँ भावी सन्तान परम्पराक सदाचारकेँ अनुकरण आ जो अनुसरण करता जदि से नहि होएत त पुत्र पिताक अनादर करत, जाहिसँ समाजक विघटन होबए लगतैक। उन्नतिक स्थान पर अवनतिक बोलबला भए जएतैक। समाज नर्क बलि जाएत। ककरोसँ ककरो कोनो मतलब नहि रहतैक। अस्तु समाजक उन्नति लेल अनुशासन परमावश्यक मानल गेल अछि।

अनुशासनक क्षेत्र बड़ पैघ होइत छैक। प्रकृतिक प्रांगणमे अनुशासन सदरिकाल प्रत्यक्ष रूपसँ परिलक्षित होइत अछि। समय पर ऋतु परिवर्तन, गाछ वृक्षमे पतझर होएब, पल्लव होएब, मजरब, फल फड़ब इत्यादि एकर प्रमाण उपस्थित करैत अछि। इएह कारण आछि जे प्राकृतिक जीवन स्वस्थ आ नियमित देखबामे अबैत अछि।

सेनामे एकर महत्त्व सबसँ बेसी देखबामे अबैत अछि। एक नायकक निर्देश पर हजारो-लाखो सैनिक युद्धक प्रज्जवलित आगिमे आहूत हेतु तैआर रहैत अछि। अनुशासनक बल पर एक व्यक्ति हजारो-लाखोक संख्यामे सैनिकक गतिविधिक संचालन करैत अछि आ शासनक बागडोरक नियंत्रण अपना हाथमे रखने रहैत अछि।

स्वयंसेवकलोकनि अनुशासनक अंकुश पाबि कए समाजक सेवा करवामे सफलता पबैत छथि। समाजमे हुनका लोक आदरक दृष्टिसँ देखैत छनि। विद्यालय आ महाविद्यालयमे अनुशासने छात्रक जीवनकँ सुन्दर आ समुज्जवल बनबैत अछि। अनुशासनविहीन छात्र अपना कर्त्तव्य पथ पर कखनहुँ सफल नहि होइत छथि; दर-दर ठोकर हुनका खाय पड़ैत छनि; हुनकर भविष्य अन्धकारमय भए जाइत अछि।

अनुशासन सभ क्षेत्रमे अुनपमेय स्थितिमे उपस्थित रहैत अछि। एकर अन्त भेलासँ सब कार्यमे गड़बडी लागत। अपनासँ पैघ-घोटक भाव समाप्त भए जाएत। अराजकताक प्रभाव समाज पर पड़तैक। अराजकता जेना फूजल उक भए जाएत। कार्यक सब क्षेत्रमे उच्छृड्.खलताक बोलबला भए जएतैक। लोक उदंड भए जाएत। विनम्रताक स्थान गारि-गज्जन आ मारि-पीट लेबए लागत।

अत: सब व्यक्तिक प्रगति लेल अनुशासन आवश्यक मानल गेल अछि। एकर गड़बडीसँ ससाजकँ पैघ क्षति हेतैक। अपनहि प्रतिष्ठा रखलासँ सभहक प्रतिष्ठा रहैत छैक। अत: सब व्यक्तिक कर्त्तव्य होइत अछि सफलताक सोपान अनुशासनक रक्षा लेल ओ सदैव सावधान रहथि अन्यथा समाज गर्तमे चलि जाएत। लोकक बीच

लोकक परिचय खत्म भए जाएत। विश्वास लोक परसँ उठि जएतैक। अतः एकर रक्षा होएब आवश्यक अछि।

(ख) कृषि क्षेत्रमे विज्ञानक चमत्कार–भारत एकटा कृषि–प्रधान देश अछि। एहिठामक अधिकांश लोक गाम मे बास करैत अछि। जकर प्रधान पेशा कृषि छैक। तैं हेतु कृषिक उन्नति पर निर्भर करैत अछि गामक उन्नति। गामक उन्नति होएतैक तखनहि भारतक उन्नति सम्भव भए सकैत अछि। से तखनहि होएत जखन कि आधुनिक युगमे एकर आधुनिकीकरण कएल गए।

प्राचीनकाल मे लोक हड़–बरदसँ खेती करैत छल। सम्प्रति ओकर स्थान वैज्ञानिक हड़ आ कि ट्रैक्टर लए रहल अछि। आजुक युगमे जोतब, चौकी देब, बीआ बाग करब इत्यादि जतेक काज सभ होइत छैक, से मशीन आश्रित औजारसँ कएल जाइत छैक। एतबहि नहि आब लोक दाओनो बड़दसँ नहि एक रहल अछि। अन्न तैआरी सेहो गृहस्थ थ्रैसर राखि करैत अछि।

खेतीक लेल जे भूमि छैक तकरा लोक विशेष उपजाऊ बनबै चाहैत अछि। ओना वैज्ञानिकलोकनिक दृष्टिमे सब भूमि उपजाउए अछि। तथापि माटिमे कोन तरहक खाद देल जाए जे फसल नीक जकाँ उपजाओल जा सकैत अछि, से कएल जाइछ। बीआकेँ स्वस्थ राखक लेल कीटनाशक दवाइक प्रयोग कएल जाइछ। आब त खेतक कमौनी सेहो वैज्ञानिके हरसँ होइत अछि। पटौनीक लेल नलकूप, दमकल, बोरिंग आ नहरि स्थान आ समय अनुसार उपयोग कएल जाइत अछि। फलतः नजदीकमे जे खेत अछि, से सालो भरि उपजा दैत अछि।

आजुक समयमे अनुसंधानसँ लोक नव-नव तरहक अन्न बियाक रूपमे प्रयोग कए अधिक उपजाकए एक तरहक चमत्कार देखा रहल अछि। बाढ़ि आ सुखाड़ पर नियंत्रण कए विज्ञान कृषकेकेँ नव जीवन दए कर्मठ बना देलक। आजुक युगमे बढ़ैत जनसंख्याक उद्देश्यपूर्ति लेल आवश्यक अन्न उत्पादन कए विज्ञान कृषिमे निखार आनि देलक।

पहिने कृषकक लेल सालमे नओ मास बेकारीक समस्या रहैत छल, लेकिन आजुक युगमे विज्ञान हुनका सबकेँ सब दिन काज दैत रहैत छनि आ हुनकर खेत सब दिन हरियर रहैत छनि।

(ग) सहशिक्षा- सहशिक्षा शब्दक अर्थ होइत अछि एक संगे भेटयबला शिक्षा अर्थात् बालिका आ बालककेँ एक विद्यालय में शिक्षक द्वारा एक प्रकोष्ठमे एक संग भेटएबला शिक्षा। एहि तरहक शिक्षा भारतमे पहिने तऽ एकदमे नहि छल, मुदा विदेशमे वेश चलन छैक। जकर कारण स्पष्टे अछि; जकर ओजह अछि विदेशमे पुरुष आ स्त्रीकेँ समान अधिकार प्राप्त छनि। पर्दाक भीतर रहब वा एकांतमे पर पुरुषसँ वार्तालाप करब एहि पर विदेशमे बन्हेज नहि छैक। ओहिठाम स्त्री-पुरुष संग मिलि एकठाम कार्य पर्यन्त करैत छथि। तैं बाल्यावस्था वा किशोरवस्थामे अध्ययनक समय बालक आ किशोरसँ पृथक क्रमशः बालिका आ किशोरीक लेल शिक्षाक व्यवस्थाक आवश्यकता नहि बुझना जाइत अछि। फलस्वरूप वयस्क शिक्षा सेहो एकहि संग देल जाइत अछि।

आ तऽ भारतोमे पश्चिमक बसात लगलैक अछि। विदेशी रंगके लोक रंगाएल पढुआ व्यक्तिकेँ आ प्रगतिशीलताक परिचायक व्यक्ति पश्चिमी देशक आचार-विचार आ रहन-सहनकेँ नीक बूझि सहशिक्षा पद्धतिक लेल डाँड़ कसि नेने छथि, लेकिन भारतीय संस्कृति आ सभ्यताक स्नेही आ रक्षक व्यक्ति चाहैत छथि जे भारतीय नारी शिष्टता, मर्यादा आ लज्जाक पालन कएनिहारि गृहलक्ष्मी होथि, जाहिसँ कि ओ गृहस्थी सम्हारि सकथि। ओ अपना परिवारकेँ शान्त, सुकोमल व्यवहारसँ स्नेह, स्वाभिमान आ स्वतंत्र वातावरणमे विकासक अवसर देथि। तथापि सहशिक्षाक गुणक अवलोकन करब आवश्यक भए गेल अछि।

सहशिक्षा प्राप्त करबाक समय छात्र आ छात्रा एक संग रहैत छथि। जाहिसँ प्रत्येक व्यक्तिकेँ एक-दोसरक प्रति अपनापनक भाव उत्पन्न होइत छैक। समानताक भावसँ सहयोग करक लेल बाध्य करैत छैक। उन्नतिक समान अवसर भेटलासँ स्त्रीकेँ अपन गुणक विकास करबाक अवसर भेटैत छैक। अपनाकेँ स्वतंत्र करैत अछि, जाहिसँ समाजमे एकर नवीनक बोध होइत छैक। पछुआएल समाज प्रगतिक अनुभव करए लगैत अछि। एक ठाम छात्र-छात्रा रहि एक दोसराकेँ आपसमे सहयोग कए हुनक भावनाकेँ ऊपर उठबैत अछि। अनुशासनक प्रचार-प्रसारसँ सबहक जीवन संयमित आ सुव्यवस्थित भए जाइत अछि। स्त्रीक जे व्यर्थक लज्जा आ निम्न मानसिकता रहैत छैक, से दूर भए जाइत छैक। फलस्वरूप दुनूकेँ मिलि कए गृहस्थी चलेबामे आसानी होइत छैक। आर्थिको लाभ भेटैत छैक। सहशिक्षासँ छात्र-छात्रा एक संग अध्यापन हेतु विद्यालय पुस्तकालय आ प्रयोगशालाक व्यवस्थासँ आर्थिक बचत होइत छैक।

एहि शिक्षामे जौं गुण त अवगुणो बहुत छैक। सहशिक्षा प्राप्तिक लेल छात्र आ छात्रा एक संग रहैत छथि। युवावस्था अबितहि छात्र आ छात्राक मोनमे कामवासना उत्पन्न होइत छैक, फलतः दुनूमे यौन-सम्बन्धी भावनाक तरंगसँ विकृति आबि जाइछ। तैं नियन्त्रित सहशिक्षा उपयोगी अछि।

7. प्रिय प्रियेश,

कमतौल

सप्रेम नमस्कार।

तिथि : 20-01-2016

हम सकुशल छी। अहाँक कुशल चाही। अहाँक पत्र भेटल। हम छात्रावासमे सानन्द रहि रहल छी। छात्रावासक अधीक्षक महोदय अनुशासनप्रिय व्यक्ति छथि। हुनका छात्र सभक प्रति पितृवत् स्नेह रहैत छनि। एतय भोजनादिक नीक व्यवस्था अछि। छात्र सभ मित्रवत् रहैत छथि। सभमे प्रेम आ सहयोगक भावना छनि। सभकेँ छात्रावासक नियम पालन करए पड़ैत छन्हि। अध्ययन आ चरित्र-निर्माणपर विशेष ध्यान देबए पड़ैत छैक। सब काजक समय निर्धारित छैक। सब छात्र तदनुकूल काज करैत छथि। समय नष्ट कएनाइ दण्डनीय छैक।

खेल-कूदक पूर्ण प्रबन्ध छैक। साँझमे हम सभ विभिन्न खेल खेलाइत छी। अखबार रोज भेटैछ। पुस्तकालयमे अनेक उपयोगी पुस्तक छैक; ओ पढ़बाक लेल मँगनी देल जाइछ। रवि दिन अवकाश रहैछ। ओ आनन्दप्रद दिन होइछ। ओहि दिन

हम नीक-नीक स्थानकेँ देखय जाइत छी। कोनो-कोनो दिन वनभोज मनबैत छी।

लिखबाक आशय अछि जे छात्रावासक जीवन सब तरहेँ नीक होइछ। अहाँ अपन अभिमत लिखब।

अहाँक

अभिन्न मित्र,

सत्यम्

8. **शीर्षक**- 'ललका पाग'।

अन्य कन्या-सदृश तिरू प्रसन्नतापूर्वक सासुर अएलीह तथा साड़ीक अढ़सँ सुन्दर पतिकेँ

देखलनि।

9. **(क)** **1.** **चुटकी लेब**- बूढ़सँ चुटकी लेब उचित नहि।

2. **अगिआ बेताल**- अनिल अगिआ बेताल अछि।

3. **अनेर-धुनेर**- अनेर-धुनेरक रक्षा भगवान करैत छथि।

4. **पाग राखब**- समय पर टाका दए अहाँ पाग राखि लेलहुँ।

5. **काहि काटब**- अनीति कार्य कयलासँ लोक बुढ़ारीमे काहि

कटैत अछि।

(ख) विद्या + आलय, जगत + ईश्वर, महा + ईश, नर+ईश, प्रति + एक।

(ग) समासक तीन भेद अछि–

(क) तत्पुरुष – जतए पहिल पद विशेषण आ उत्तर पर विशेष्य होइत अछि। चारि बाट–चौबट्टी, दानमे वीर–दानवीर।

(ख) द्वन्द्व – जतए दूहू पद प्रधान हो। जेना–घर–आगंन, गाछी–बिरछी।

(ग) बहुव्रीहि– जतए सामान्य अर्थसँ भिन्न अर्थक बोध होएत अछि, जेना–कनकट्टा–कान छैक कटल जकर।

(घ) गृहस्थ– संन्यासी, ज्ञानी–अज्ञानी, सिर–पएर, कारी–गोर, दु:ख–सुख।

(ड़) गंगा – सरसिज, भगिरथी

तालाब– पोखरि, जलाशय

चन्द्रमा– मयंक, मृगांक

मेघ– जलद, अम्बर

पुत्र– सुत, तनय।

(च) (i) हम गाम जाएब।

(ii) राम पोथी पढ़ताह।

(iii) राधा कृष्णक प्रियतमा छलीह।

(iv) माय गेलीह

(v) भाय अयलाह

***